Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

अल्लाह तआला का आदेश

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۚ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ۔

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: और अल्लाह ही का है जो आकाशों और ज़मीन में है वह जिसे चाहता है क्षमा कर देता है और जिसे चाहता है आज़ाब देता है और अल्लाह बहुत क्षमा करने वाला और बार बार रहम करने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 4

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 33-34

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

13-20 ज़िल्हज्ज 1440 हिजरी कमरी 15-22 ज़हूर 1397 हिजरी शमसी 15-22 अगस्त 2019 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

अगर तुम इस्लाम का समर्थन और ख़िदमत करना चाहते हो तो पहले ख़ुद तक़्वा और पवित्रता धारण करो जिस से ख़ुद तुम ख़ुदा तआला की पनाह के मज़बूत क़िला में आ सको। और फिर तुमको इस ख़िदमत का सौभाग्य और योग्यता प्राप्त हो।

अल्लाह तआला का फ़ज़ल हमेशा मुत्तक़ियों और सच्चों ही के साथ शामिल हुआ करता है। अपने आचरण और आदतें ऐसे ना बनाओ जिनसे इस्लाम को दाग़ लग जाए।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

नेकी क्या चीज़ है?

नेकी एक सीढ़ी है इस्लाम और ख़ुदा की तरफ़ चढ़ने का लेकिन याद रखो कि नेकी क्या चीज़ है। शैतान हर एक राह में लोगों की राहज़नी करता और उनको सच्चाई के रास्ते से बहकाता है। जैसे रात को रोटी ज़्यादा पक गई और सुबह को बासी बच रही। ठीक खाने के वक़्त कि इस के सामने अच्छे अच्छे खाने रखे हैं। अभी लुक़्मा नहीं उठाया कि दरवाज़ा पर आकर फ़क़ीर ने आवाज़ दी और रोटी मांगी। कहा कि बासी रोटी मांगने वाले को दे दो। क्या ये नेकी होगी? बासी रोटी तो पड़ी ही रहनी थी। नेअमते पसन्द करने वाले उसे क्यों खाने लगे? अल्लाह फ़रमाता है

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّاَسِيْرًا

(अद्दहर:9) यह भी मालूम रहे कि तआम (खाना) कहते ही पसंदीदा तआम को हैं। सड़ा हुआ बासी तआम नहीं कहलाता। अत: अगर इस प्याली में से जिसमें अभी ताज़ा खाना लज़ीज़ और पसंदीदा रखा हुआ है और खाना शुरू नहीं किया। फ़क़ीर की आवाज़ पर निकाल दे तो यह तो नेकी है।

बेकार और निकम्मी चीज़ों के ख़र्च से कोई आदमी नेकी करने का दावा नहीं कर सकता। नेकी का दरवाज़ा तंग है अत: यह बात याद रख लो कि निकम्मी चीज़ों के ख़र्च करने से कोई इस में दाख़िल नहीं हो सकता। क्योंकि कुरआन मजीद की आयत है कि لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ (आले इम्रान:93) जब तक प्रिय से प्रिय प्यारी चीज़ों को ख़र्च ना करोगे उस वक़्त तक महबूब और प्रिय होने का दर्जा नहीं मिल सकता। अगर तकलीफ़ उठाना नहीं चाहते और वास्तविक नेकी को धारण करना नहीं चाहते तो क्योंकर कामयाब और सफल हो सकते हो। क्या सहाबा किराम रज़ि मुफ़्त में इस दर्जा तक पहुंच गए जो उनको हासिल हुआ। दुनियावी खिताबों के हासिल करने के लिए कितने खर्च और तकलीफ़ें बर्दाश्त करनी पड़ती हैं तो फिर कहीं जा कर एक मामूली ख़िताब जिस से हार्दिक सन्तोष और इत्मिनान हासिल नहीं हो सकता, मिलता है। फिर ख़्याल करो कि रज़ी अल्लाहो अन्हुम का ख़िताब जो दिल को तसल्ली और हृदय को इतमीनान और मौला करीम की रज़ामंदी का निशान है। क्या यूंही आसानी से मिल गया?

बात यह है कि ख़ुदा तआला की रजामंदी जो हक़ीक़ी ख़ुशी का कारण है हासिल नहीं हो सकती जब तक अस्थायी तकलीफ़ें बर्दाश्त ना की जाएं। ख़ुदा ठगा नहीं जा सकता। मुबारक हैं वे लोग जो अल्लाह तआला की रज़ा को प्राप्त करने के लिए तकलीफ़ की परवाह ना करें क्योंकि स्थायी ख़ुशी और हमेशा के आराम की रोशनी इस अस्थायी तकलीफ़ के बाद मोमिन को मिलती है।

सच्चा मुसलमान कौन है?

मैं खोल कर कहता हूँ कि जब तक हर बात पर अल्लाह तआला प्रथम ना हो जाए और दिल पर नज़र डाल कर वह ना देख सके कि यह मेरा ही है इस वक़्त तक कोई सच्चा मोमिन नहीं कहला सकता। ऐसा आदमी तो अलिफ लाम (उर्फ़ आम) के तौर पर मोमिन या मुसलमान है। जैसे चूहड़े को भी मुसल्ली या मोमिन कह देते हैं। मुसलमान वही है जो अस्लिम वज्हहो लिल्लाह का मिस्दाक़ हो गया है। वज्हुन मुंह को कहते हैं। मगर उस का इतलाक़ ज़ात और वजूद पर भी होता है। अत: जिसने सारी ताक़तें अल्लाह के हुज़ूर रख दी हूँ वही

शेष पृष्ठ 12 पर

125 वां
जलसा सालाना क़ादियान
दिनांक 27, 28, 29 दिसम्बर 2019 ई. को आयोजित होगा

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 125 वें जलसा सालाना क़ादियान के लिए दिनांक 27, 28 और 29 दिसम्बर 2019 ई.(जुम्अ:, हफता व इतवार) की स्वीकृति दी है। जमाअत के लोग अभी से इस शुभ जलसा सालाना में उपस्थित होने की नीय्यत करके दुआओं के साथ तैयारी आरम्भ कर दें। अल्लाह तआला हम सब को इस ख़ुदाई जलसे से लाभ उठाने की क्षमता प्रदान करे। इस जलसा सालाना की सफलता व बा-बरकत होने के लिए इसी तरह यह जलसा लोगों के लिए मार्ग दर्शन हो इसके लिए विशेष दुआएँ जारी रखें। धन्यवाद

(नाज़िर इस्लाह व इरशाद मरकज़िया, क़ादियान)

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का अमरीका का सफर, अक्तूबर 2018 ई (भाग-5)

ख़लीफ़ा के व्यक्तित्व को अगर एक शब्द में बयान किया जाए तो उन्हें साक्षात अमन कहा जा सकता है

ख़लीफ़ा का व्यक्तित्व निहायत ख़ूबसूरत और सम्मान वाला है जो फ़ौरन दिल पर असर करता है

हुज़ूर अनवर को देखते ही ऐसा महसूस हुआ जैसा कि आपकी ज़ात से ख़ुदा तआला का नूर निकल रहा है। मैंने बहुत से लोगों को यह प्रतिक्रिया करते देखा है और मैं ख़ुद उस की गवाह हूँ। आपकी मौजूदगी में लोग ख़ुदाई नूर नाज़िल होता महसूस कर रहे होते हैं। आज इस्लाम के ख़लीफ़ा को देखकर और उन के ख़िताब को सुन कर यूं महसूस हुआ जैसे हमारी कैथोलिक कम्यूनिटी के मज़हबी रहनुमा पोप हमसे मुख़ातब हों, ख़लीफ़ा का ख़िताब यूं मालूम होता था जैसे ज़ुल्मत के पर्दे फाड़ रहा हो। अत: मैं उम्मीद करती हूँ कि लोग ख़लीफ़ा के ख़िताब को सुन कर जहालत को छोड़ कर रोशनी के इस नए दौर में दाख़िल होंगे।

आप के ख़लीफ़ा के व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। इन के आने से फ़िज़ा पर एक अजीब असर छा गया था, उनका पैग़ाम भी मुहब्बत और इख़लास से भरा हुआ था। आज अज़ान भी सुनी जिसने दिल पर एक गहरा असर छोड़ा है। हुज़ूर अनवर के ख़िताब के दौरान मैं उन की एक एक बात से सहमति कर रहा था।

हुज़ूर अनवर का वजूद तो घायल कर देने वाला है, आपका हर वाक्य ऐसा था कि में इस से आनन्दित हो रही थी,एहसास होता था कि आप दिल से बातें कर रहे हैं, हुज़ूर अनवर की ज़ात में एक जाज़बियत है, महसूस हो रहा था कि यह शख़्स जो कुछ कह रहा है वह उसके दिल की आवाज़ है, हुज़ूर अनवर निहायत शफ़ीक़ हैं , आप बहुत नरम बात करने वाले हैं और वास्तविक तौर पर दुनिया में अमन चाहते हैं।

ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत हौसला प्रदान करने वाली और दिलों को गरमाने वाली थी, ख़लीफ़ा ने विश्वव्यापी पैग़ाम दिया है। ख़लीफ़ा के व्यक्तित्व को अगर एक शब्द में बयान किया जाए तो उन्हें साक्षात अमन कहा जा सकता है।

मस्जिद बैतुलसमद (बाल्टीमोर, अमरीका) के उद्घाटन के अवसर पर सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ के ख़िताब के बाद मेहमानों के ईमान वर्धक विचार।

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक: शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

20/अक्तूबर 2018 ई (दिनांक हफ़्ता)(बक़ीया रिपोर्ट)

आयोजन में शामिल मेहमानों के विचार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैतुल समद (बाल्टीमोर)के उद्घाटन के अवसर पर जो ख़िताब फ़रमाया इस ख़िताब ने मेहमानों पर गहरा असर छोड़ा और बहुत से मेहमानों ने अपने विचार को प्रकट किया।

* एक मेहमान टीचर ने कहा : हुज़ूर अनवर के ख़िताब ने मुझे बहुत प्रभावित किया है। यह वज़ाहत ज़रूरी थी। मुझे खासतौर पर इस बात पर ख़ुशी हुई है कि जो आपने मस्जिद के उद्देश्य बयान फ़रमाए हैं और यह कि मस्जिद अपने पड़ोसियों के लिए क्या क्या काम आएगी। हमें एक दूसरे से मतभेद के बावजूद साझे मामलों पर इकट्ठे होना चाहिए और आपस में मिल कर समाज की बेहतरी के लिए काम करना है। यह एक शानदार पैग़ाम था। अगर इस पर अनुकरण हो तो समाज बहुत बेहतर हो सकता है।

* एक यूनीवर्सिटी के प्रोफ़ैसर ने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर का पैग़ाम कि हमें सकारात्मक चीज़ें देखनी चाहिऐं। जहां हमारे मध्य मतभेद हैं इसी जगह हम में बहुत सी चीज़ें साझी हैं। यह एक हैरत-अंगेज़ पैग़ाम था कि जिसके द्वारा हम समाज में अहम तबदीली पैदा कर सकते हैं। हमें एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना है, एक दूसरे का सम्मान करना है। बहुत ही अच्छा पैग़ाम है। यू .एस. ए के माहौल में यह पैग़ाम बहुत अहम है। अमरीकी होने के नाते हमें ना सिर्फ अपने लिए बल्कि अपने बच्चों के लिए काम करना है, समाज में सबको साथ मिलाकर आगे चलना है। मुझे इस हैरत-अंगेज़ पैग़ाम ने बहुत प्रभावित किया है।

* गैमबेन एंबेसी से सम्बन्ध रखने वाले Lamin साहिब ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: यह ख़िताब बहुत प्रभावित करने वाला था। मैं ख़ुद भी एक अहमदिया स्कूल में पढ़ा हूँ। जो मैं आज हूँ वह अहमदिया जमाअत के कारण हों। मैं आप लोगों का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। मैं गीमबया के एंबेसेडर और सारी देश की तरफ से आप लोगों का शुक्रिया अदा करता हूँ। गेमबिया में आप लोगों के समाज सेवा के काम इंतिहाई शानदार हैं। स्कूल, हस्पताल इत्यादि, हर जगह आप इन्सानियत की सेवा कर रहे हैं। आप लोगों का बहुत शुक्रिया। * एक औरत ने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: मैं हुज़ूर अनवर के पैग़ाम को सुनकर बहुत भावनात्मक हो गई हूँ। मेरे लिए यह बहुत शान्ति वाली बातें थीं। उनमें उम्मीद नज़र आती है। आजकल के हालात में मेरे लिए इस ख़िताब में बहुत ही अहम पैग़ामात थे। मुसलमानों और ग़ैर मुस्लिमों, काले और गोरे के मध्य यहां बहुत मतभेद हैं। हमें इन सब दूरियों का हल तलाश करना है और यह आपसी सम्मान से ही मुम्किन है। हुज़ूर अनवर ने जो पड़ोसी की प्रशंसा फ़रमाई है, पड़ोसी से हुस्न सुलूक का जो पैग़ाम दिया है, यह मेरे लिए बहुत ही शानदार था। इस पैग़ाम को सुन कर मुझे इस्लाम के बारे में और अधिक जानने की तरग़ीब हुई है। आप लोगों का बहुत शुक्रिया।

* एक मेहमान ने अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहा: एक दूसरे के साथ मिलकर काम करना, एक बहुत ही शानदार पैग़ाम था। मैं हिंदू हूँ लेकिन मैं यहां आया हूँ, क्योंकि हम सब इन्सान हैं, हमें इकट्ठे मिलकर काम करना है। मुझे यहां आकर और ऐसा पैग़ाम सुनकर बहुत ख़ुशी हुई है।

* बिलाल अली साहिब(Representative of State from 41 District) भी इस प्रोग्राम में शामिल थे। उन्होंने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर ने जो पैग़ाम दिया है इस की गूंज यहां सारे लोगों में सुनाई दे रही है। आपसी एकता, बराबरी, मुहब्बत और प्यार की फ़िज़ा स्थापित करने में यह पैग़ाम बहुत अहम है। इस्लाम के ख़िलाफ़ जो शंकाए पाई जाती हैं, उन्हें दूर करने में बहुत मदद मिलेगी। आपका माटो मुहब्बत सब के लिए, नफ़रत किसी से नहीं ऐसा पैग़ाम है, जो हम सब के लिए एक स्वीकार करने योग्य माटो है। हुज़ूर अनवर ने वक़्त पर बहुत सी समस्याओं का हल हमें बता दिया है। ख़ासकर यहां के हालात में काफ़ी हद तक सयासी बयान भी मुसलमानों के ख़िलाफ़ भावनाएं उभार रहे हैं, हुज़ूर अनवर जैसे उच्च वजूद का यहां आना और इन बातों के बारे में रहनुमाई बहुत ही अच्छा क़दम है। आपने ऐसे माहौल में बहुत ही हिकमत वाला, दलीलों से भरा पैग़ाम दिया है, जिससे कोई भी अक़ल रखने वाला इन्कार नहीं कर सकता। मैंने समाज में अमन स्थापित करने का बहुत आसान हल सीखा है, वह यह कि अपने घर से शुरू करें, पड़ोसियों से हुस्ने सुलूक करें, आपको सारी दुनिया को बदलने की ज़रूरत नहीं है, सिर्फ वे लोगों जिनसे आप मिलते-जुलते हैं, उनमें प्यार बांटें, उनकी सेवा करें तो सारा समाज अमन वाला हो जाएगा। यह एक बहुत ही आसान नुस्ख़ा है। इस्लाम

शेष पृष्ठ 10 पर

ख़ुत्बः जुमअः

दुनिया को यह नज़र आ रहा है कि इस्लाम इंशा अल्लाह तआला अहमदियत के फैलना है।

हमें अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी में बढ़ते हुए अपनी तरफ़ से अपनी कोशिशों को मज़ीद बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए ताकि अल्लाह तआला के यह फ़ज़ल और नवाज़िशें बढ़ती चली जाएं।

यह माहौल हमारे अस्थायी माहौल ना हूँ बल्कि हमारी ज़िन्दगियों का हर लम्हा इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा को हमारे हर कर्म से दिखाने वाला हो।

जर्मन जमाअत के इख़लास-ओ-वफ़ा और इस के क़ुर्बानी की भावना को देखकर भी मैं कह सकता हूँ कि अगर इस (नई जगह की ख़रीद के लिए कुछ आर्थिक क़ुर्बानी की ज़रूरत पड़ी तो जमाअत इंशा अल्लाह तआला ये क़ुर्बानी करेगी। अल्लाह तआला उनकी तौफ़ीक़ को भी बढ़ाए

ना सिर्फ काम करने वाले बल्कि जलसा में शामिल होने वाला हर अहमदी ग़ैरों के लिए अपने अख़लाक़ और व्यवहार की वजह से ख़ामोश तब्लीग़ का माध्यम बन रहा होता है

आपने समस्त समस्याएं वर्णन करने के बाद मज़हब से इस का हल पेश किया और बताया कि इन समस्त समस्याएं का हल ख़ुदा को पहचानने में है। आपने ये साबित किया है कि मज़हब मसला नहीं बल्कि समस्याएं का हल है।

मैं शुक्रगुज़ारी के जज़बात के साथ इस बात की गवाही देती हूँ कि मैंने ऐसे लोगों को देखा जिनका ख़ुदा पर यक़ीन और ईमान बहुत मज़बूत है मुझे उम्मीद है कि आप ये नेक काम जारी रखेंगे इस सिलसिला में ज़्यादा तवज्जा और मुहब्बत जारी रखेंगे और फिर एक वक़्त आएगा लोगों को इस बात का ज्ञान होगा कि ज़िन्दगी का वास्तविक मक़सद और वैल्यू value)क्या है।

जो मुहब्बत और इन्सानियत का सम्मान ,बराबरी और भाईचारा यहां आकर देखा ऐसा कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा और ना ही किसी और प्रोग्राम में देखा।

मैं धार्मिक ज्ञान हासिल कर रही हूँ , जलसा पर पहली बार आई हूँ और मेरा यक़ीन है कि यह जलसा अमन के हुसूल का एक बेहतरीन माध्यम है।"'हम अपने तजुर्बे के आधार पर भी यह कह सकती हैं कि इस्लामी शिक्षाएं बहुत गहरी और हिक्मत से भरी हैं और औरतें अलग जगह पर ज़्यादा आसानी और इतमीनान महसूस हैं करती हैं और उन्हें अपने प्रबन्धों सँभालने और अपनी क़ाबिलियतों का जोहर दिखाने का व्यापक मौक़ा मिलता है।

मैं यह स्पष्ट रूप से कह सकता हूँ कि दुनिया में किसी जगह भी कोई अपने स्यासी या मज़हबी लीडर से ऐसा प्यार नहीं करता जितना यहां मैंने अपने ख़लीफ़ा से लोगों को करते देखा है और मैं इस सच्चाई को स्वीकार करता हूँ।

जलसा सालाना जर्मनी के कामयाब आयोजन के बाद अल्लाह तआला के हुज़ूर इज़हार तशक्कुर अहमदियों को अपनी कोशिशों को और अधिक करने की नसीहत मीडिया के विभिन्न माध्यमों से करोड़ों लोगों तक अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम का पैग़ाम पहुंचा

अफ्रीक़ा, यूरोप, रशियन इस्टेट्स, एशिया सारी दुनिया के समस्त मुल्कों से जलसा सालाना जर्मनी पर तशरीफ़ लाने वाले अहमदी, ग़ैर अज़ जमाअत और ग़ैर मुस्लिम मेहमानों की प्रतिक्रियाओं का वर्णन

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 12 जुलाई 2019 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक,इस्लामाबाद। (सरे), यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले दिनों अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जमाअत अहमदिया जर्मनी का जलसा सालाना अल्लाह तआला के फ़ज़लों को समेटते हुए अपने समापन को पहुंचा। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जैसा कि मैंने आख़िरी दिन बताया भी था इस साल वहां हाज़री भी चालीस हज़ार से ऊपर थी। ये तरकिय्यां हम हर साल देखते हैं। यह केवल और केवल अल्लाह तआला का फ़ज़ल है जो हमारे कामों और हमारी कोशिशों से बढ़कर हमें देता है। अत: हमें अल्लाह तआला की शुक्रगुज़ारी में बढ़ते हुए अपनी तरफ़ से अपनी कोशिशों को मज़ीद बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए ताकि अल्लाह तआला के ये फ़ज़ल और नवाज़िशें बढ़ती चली जाएं

जलसा में शामिल होने वाले सैंकड़ों ग़ैर अज़ जमाअत और ग़ैर मुस्लिम मेहमानों ने इस बात का इज़हार किया कि एक ग़ैर मामूली माहौल और असर देखने में आया है। अपने तो इज़हार करते ही हैं लेकिन किस तरह समस्त काम करने वाले बच्चे बच्चियां तक काम करते हैं और किस तरह इतनी बड़ी संख्या में लोग बिना किसी झगड़े और फ़साद के रहते हैं। यह ग़ैरों के नज़दीक एक अजीब ग़ैर-मामूली चीज़ है बल्कि कुछ ने तो यह इज़हार किया कि यह एक चमत्कार है। अत: हमारा जलसा अतिरिक्त हमारी अपनी तर्बीयत के तब्लीग़ का भी एक बहुत बड़ा माध्यम बनता है।

अत: यह चीज़ हमसे मांग करती है कि हम ख़ुदा तआला की शुक्रगुज़ारी में बढ़ते चले जाएं और यह माहौल हमारे अस्थायी माहौल ना हों बल्कि हमारी ज़िन्दगियों का हर लम्हा इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा को हमारे हर कर्म से दिखाने वाला हो और हम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने के मक़सद को हर वक़त पूरा करने वाले हों।

प्राय मैं जलसा के बाद मेहमानों की प्रतिक्रियांए और जलसा के बारे में कुछ बातों का ज़िक्र किया करता हूँ। आज मैं वे पेश करूँगा लेकिन इस से पहले मैं काम करने वाले काम करने वालों और काम करने वालियों का भी शुक्रिया अदा करना चाहता हूँ जिन्हों ने रात-दिन एक कर के जलसा के प्रबन्धों को हर लिहाज़ से कामयाब करने की कोशिश की और अब वहां वाइंडि उप (wind-up)हो रहा है तो ये लोग अभी तक काम कर रहे हैं

जैसा कि अब यहां भी और दुनिया की हर बड़ी और मुनज़्ज़म जमाअत में देखने में आता है कि काम करने वाले जलसा के कामों के लिए अपने व्यक्तिगत लाभों और कामों को पीछे डाल कर सिर्फ और सिर्फ जलसा के प्रबन्धों और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मेहमानों के काम के लिए अपना हर लम्हा वक़्फ़ कर देते हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से जर्मनी की जमाअत भी इख़लास तथा वफ़ा में बढ़ी हुई जमाअत है बल्कि कुछ क़ुर्बानियों में तो कुछ जमाअतों से भी ज़्यादा बढ़ी हुई है। अगर कहीं कमी होती है तो ओहदेदारों के काम के तरीक़ा या सही काम ना लेने या ना करने में कमी होती है लेकिन जमाअत के लोगों को अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बहुत क़ुर्बानी करने वाले हैं। जान, माल, वक़्त क़ुर्बान करने वाले हैं। अल्लाह तआला उनके इख़लास तथा वफ़ा को बढ़ाता चला जाए।

इस बार शामिल होने वालों की संख्या बढ़ने के बाद इंतिज़ामीया और अमीर साहिब को भी ख़्याल आया यद्यिप ये ख़्याल पिछले साल भी आया था और मैं भी उनको कुछ सालों से कह रहा था लेकिन इस साल लगता है कि संजीदा हुए हैं और अमीर साहिब और मर्कज़ी नैशनल आमिला और ओहदेदार जो हैं वे ज़्यादा संजीदा हैं कि हमारे पास अपनी एक बड़ी जलसा गाह होनी चाहिए। इस बार उनको पार्किंग इत्यादि का भी मसला रहा है जिसकी वजह से ट्रैफ़िक के समस्याएं भी पैदा हुईं और एक अवसर पर फिर लोगों को जलसा गाह में आकर प्रोग्राम में शामिल होने में भी दिक्कत रही। ज़ाहिर है कि ऐसे हालात में जब भीड़ भी ज़्यादा हो और इंतिज़ाम में ज़रा सी कमी हो जाए तो यह ऐसी सूरत पैदा हो जाती है। थोड़ी सी बदमज़गी भी हुई, यह भी क़ुदरती बात है होनी थी। लोगों ने जो शामिल नहीं हो रहे थे लेट हो रहे थे नाराज़गी का इज़हार भी किया और डयूटी वाले काम करने वाले भी जो ट्रैफ़िक और पार्किंग में थे परेशान रहे लेकिन बहरहाल ऐसे हालात में यह भी अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि फ़ोन पर ऐम टी ए की सहूलत की वजह से लोगों ने तक़रीरें सुन लीं या प्रोग्राम देख लिए, सुन लिए। जलसा की ये सब बातें ऐसी बातें हैं जो फिर उस तरफ़ ध्यान दिलाती हैं कि कोई खुला इंतिज़ाम होना चाहिए। फिर जलसा की तारीखें भी इंतिज़ामीया के अनुसार निर्धारित करनी पड़ती हैं। अपनी आज़ादी नहीं और इस बार तो जलसा का हाल भी उन्होंने बिलकुल आख़िरी वक़्त में दिया है। ये सब बातें अब इंतिज़ामीया को इस तरफ़ ध्यान दिला रही हैं कि उनकी अपनी जगह हो जहां जलसा आयोजित किया जा सके। अमीर साहिब ने मुझे बताया कि उन्होंने एक जगह देखी है जिसके हुसूल की वह कोशिश कर रहे हैं और यह उन्हें पसंद भी आई है। अल्लाह तआला के नज़दीक अगर वह जगह जमाअत के लिए बेहतर है तो अल्लाह तआला उस के ख़रीदने और लेने के भी इंतिज़ाम फ़र्मा दे और आसानी पैदा कर दे । मुझे उम्मीद है और इसी तरह जर्मन जमाअत के इख़लास वफ़ा और क़ुर्बानी के इस के भावना को देखकर भी मैं कह सकता हूँ कि अगर उस के लिए कुछ आर्थिक क़ुर्बानी की ज़रूरत पड़ी तो जमाअत इंशा अल्लाह तआला यह क़ुर्बानी करेगी। अल्लाह तआला उनकी तौफ़ीक़ को बढ़ाए।

जैसा कि मैंने जर्मनी के जलसा के आख़िरी दिन में कहा था कि जर्मनी का जलसा भी अब विश्वव्यापि जलसा बन गया है और यूरोप के लिए तो जलसा जर्मनी में शामिल होना पहले भी आसान था। अब इस बार ये महसूस हुआ है कि कुछ दूसरे देशों जैसे भूतपूर्व रूस की रियास्तें हैं और अफ़्रीक़ा के कुछ देश हैं उन लोगों का भी वहां आना ज़्यादा आसान रहा है और वीज़े आसानी से मिले हैं। इस लिहाज़ से जर्मनी में भी जलसा गाह और सम्बन्धित प्रबन्धों में वुसअत की है।

काम करने वालों का शुक्रिया अदा करने और जलसा के बारे में इन बातों के बाद अब मैं आपके सामने जलसा पर आने वालों के कुछ विचार प्रस्तुत करूँगा जिनसे पता चलता है कि ना सिर्फ काम करने वाले बल्कि जलसा में शामिल होने वाला हर अहमदी अपने अख़लाक़ और व्यवहार की वजह से दूसरों के लिए ख़ामोश तब्लीग़ का माध्यम बन रहा होता है। जलसा के दिनों में वहां हफ़्ते वाले दिन दोपहर को ग़ैर अहमदी और ग़ैर मुस्लिमों के लिए एक अलग प्रोग्राम भी होता है जिसमें मेरी तक़रीर भी होती है तो सबसे पहले में इस में शामिल होने वालों के विचार वर्णन करता हूँ। इस प्रोग्राम में बाक़ी वक़्त तब्लीग़ी बैठक ,तब्लीग़ी प्रोग्राम होता है जो वहां की स्थानीय इंतिज़ामीया मेहमानों के साथ करती है

इस साल तब्लीग़ी बैठक में उनके कुल ग्यारह सौ उनासी,seventy nine एक हज़ार एक सौ उनासी 1179 मेहमान शामिल हुए। इस में जर्मन मेहमानों की संख्या 502थी और अन्य यूरोपियन अक़्वाम से सम्बन्ध रखने वाले मेहमानों की संख्या 341थी । उस के अतिरिक्त157 अरब देशों से सम्बन्ध रखने वाले लोग आए।104एशियन और 75अफ़्रीकन मेहमान भी शामिल हुए। इस तरह वहां कुल सतासठ 67 क़ौमों के मेहमानों की नुमाइंदगी थी

इन मेहमानों में एक मिस्टर Hans Oliver हैं जो फ़्रैंकफ़र्ट की एक ला फ़र्म के सीनीयर पार्टनर हैं और इस लिहाज़ से वकील हैं। उन्होंने तब्लीग़ी बैठक में शामिल हो कर और मेरी तक़रीर सुनने के बाद अपने ये विचार वर्णन किए कि इमाम जमाअत अहमदिया की तक़रीर मेरे लिए बहुत पुरजोश और हैरान करने वाली तासीर रखती थी। फिर लिखते हैं कि बज़ाहिर पुरस्कून और रोज़मर्रा के मामूल के अनुसार चलते हुए हालात में आने वाले ख़तरों और जंग को भाँप लेना यह बड़ी अहम बात है और इमाम जमाअत अहमदिया ने ना सिर्फ भविष्य में संभावित ख़तरों को हक़ीक़ी तौर पर महसूस किया है बल्कि साथ साथ दुनिया को ख़बरदार भी कर रहे हैं। इसी तरह उन्होंने इमीग्रेशन को जिस तरह हुकूमतों के समाजी और इक़तिसादी हितों के साथ जोड़ कर दिखाया है वह समीक्षा भी हकीकतपरआधारित थी। फिर कहते हैं कि एक क़ानून दान के तौर पर मैं इस पहलू को अपने साथियों से वर्णन करना और दो तरफ़ा ज़रूरत की समझ को आम करना चाहूँगा क्योंकि आम तौर पर यहां लोग सिर्फ पनाह लेनेवालों के आने का नकारात्मक ज़िक्र ही करते हैं मगर उस के साथ जड़े हुए देशों और क़ौमों के स्थानीय हितों को नज़रअंदाज कर जाते हैं जो कि बड़ा अहम है।

फिर वेरीना लुडविग साहिबा Vereena Ludwig जो लुफ्थांस (Lufthansa) में हैं। एयर लाईन के आई टी डिपार्टमैंट की एक्सपर्ट हैं। वह कहती हैं कि मैं ख़िताब को सुनते वक़्त निरन्तर सोच रही थी कि गुफ़्तगु अन्य रहनुमा भी करते हैं और दुनिया को संभावित ख़तरों से बचने की नसीहत भी करते हैं। फिर कहती हैं कि संसार के अमन की स्थापना पर बात करना तो लीडरों के लिए एक हॉट केक है मगर इमाम जमाअत अहमदिया की गुफ़्तगु में जो ताक़त थी वह मैंने कहीं और नहीं देखी और दूसरी बात यह है कि बड़ी तफ़सीली तहक़ीक़ भी थी जिस से गहरा दर्द भी ज़ाहिर होता है। अगर यह दर्द ना हो तो कोई इतनी विस्तार पूर्वक समीक्षा पेश नहीं करता। फिर कहती हैं कि मज़हबी नुक़्ता नज़र से ही नहीं बल्कि समाजी और आर्थिक हवालों से दुनिया की लीडरशिप पर स्पष्ट किया है कि संसार का अमन अल्लाह के ख़ौफ़ से जुड़ा हुआ है। अगर व्यक्तिगत लाभ से ऊपर उठ कर कार्य ना किए गए तो ऐटमी जंग की भयावह तबाही के ज़िम्मेदार हम होंगे। फिर कहती हैं कि मेरे नज़दीक इस क़दर स्पष्टता के साथ पैग़ाम दे दिया गया है कि अगर द्वेष ना हूँ तो इन्सान के रौंगटे खड़े करने के लिए यह चेतावनी काफ़ी है और फ़ैसला करने वालों तक ये पैग़ाम पहुंचना चाहिए क्योंकि इन्सानियत के व्यापक लाभ के लिए उस का ग्लोबल स्तर पर समझ का आम होना भी है।

फिर मिस्टर कलाओज़े Klause) और मिसिज़ हाइडे Heide) ये दो जर्मन मियां बीवी थे, ये कहते हैं कि यहां आने से पहले हमारा तो बहुत भयभीत सी हालत थी। और यद्यपि कई साल से जमाअत का परिचय था मगर जलसा में आते हुए हमारी शंकाएं होती थीम जिनकी बुनियाद इस्लाम और मुसलमानों के बारे में मीडिया से सुनी हुई मालूमात पर ही थी। इसलिए यहां आते ही हम आज भी बहुत घबराए हुए थे कि पता नहीं कैसी भीड़ होगी लेकिन आने के बाद हम दोनों मियां बीवी ऐसे रीलेक्स हैं और माहौल में इतना अपनापन है कि हम मानो अपने ही माहौल में घूम रहे हैं। मेरी तक़रीर के बाद उनकी बीवी कहती हैं कि इस सम्बन्ध में मैं यह कहना चाहूंगी कि मैंने जंग के फ़साद अपनी आंखों से ख़ुद देख रखे हैं। (दूसरे विश्वयुद्ध की यह बात कर थीं) और इमाम जमाअत अहमदिया ने जिन तबाहियों और जिन भयावह दृष्यों से समय से पहले ख़बरदार किया है या कर रहे हैं और जिस दर्द और संजीदगी की रूह से इन्सानियत को सचेत कर रहे हैं इस का असर मुझ जैसों पर जिन्होंने विश्वयुद्ध देख रखा है और तरह से होता है। इसलिए हम इस ख़िताब के

शब्द शब्द से सहमत हैं और चाहते हैं कि मौजूदा नस्ल इस को समय पर समझे और एहसास कर सके। इन औरत के पति कहते हैं कि उन्होंने ख़तरों की निशानदेही तो ज़रूर की है मगर यह वर्णन करते हुए ना तो किसी का नाम लिया और ना ही इस तरह के वर्णन से दौरान गुफ़्तगु किसी तरफ़ ख़ास झुकाओ का प्रतिक्रिया मिल रही थी और नसीहत का अंदाज़ दर्द भरा सचेत करने का था ना कि कोई व्यक्तिगत पसंद ना पसंद का। व्यक्तिगत झुकाओ की कोई छोटी सी बात भी उनकी गुफ़्तगु से नहीं मिला और मज़हबी सरबराह का यही मुक़ाम होता है। फिर यह कहते हैं कि इस गुफ़्तगु के बाद मैं सहमत हो रहा हूँ कि जमाअत अहमदिया में दुनिया के लिए एक दर्द है।

फिर मिस्टर नोबर्ट वेंगर (Nobert Wagner) इमीग्रेशन लायर, यह कहते हैं कि यद्यपि मैं जलसा में शिरकत पहली बार नहीं कर रहा और अहमदियों के केसिज़ के वकील के तौर पर मुझे अक्सर बातों का ज्ञान होता रहता है। यह अहमदियों के असाइलम केस करते हैं, लेकिन इमाम जमाअत अहमदिया का आज का ख़िताब मेरे लिए बिलकुल नए पहलू और नई बातों पर आधारित था। यद्यपि कि मैं अपने विचार का इज़हार कर रहा हूँ मगर यह इज़हार एक तरह का फ़ौरी विचार है जो मैं कह रहा हूँ जबकि अभी इस तक़रीर में मेरे लिए पेशावाराना ज़रूरत की बहुत सी प्रमुख बातें हैं जिन को मैं घर जा कर दोबारा ध्यानपूर्वक देखूंगा। मुहाजरीन और वतन को छाड़ने वालों के मसले पर आज जो दृष्टि इमाम जमाअत अहमदिया ने वर्णन की है इस से मेज़बान मुल्कों और मुहाजरीन के आपसी मामलों में एक तवाज़ुन और वक़ार पैदा होगा और खासतौर पर जिस तरह उन्होंने संख्याओं की मदद से बुढ़ापे और रिटायरमैंट की उम्र के हवाले से जर्मनी की लोगोंी क़ुव्वत की ज़रूरत को उजागर किया है इस से पनाह गज़ीनों की इज़्ज़त-ए-नफ़स को भी सहारा मिलेगा और मेज़बान इदारों में भी इन मुहाजरीन की इज़्ज़त और वक़ार बढ़ेंगे मगर मैं दोबारा कहना चाहता हूँ कि अभी मेरे लिए और इमीग्रेशन ला की प्रैक्टिस करने वाले दोस्तों के लिए इस में बहुत मवाद है जो हमारे काम आ सकता है तो इस लिहाज़ से भी, दुनियावी लिहाज़ से भी लोगों की मदद हो रही है ।

फिर स्विटज़रलैंड से एक औरत लैला साहिबा हैं। कहती हैं मैं एक संस्था के लिए काम करती हूँ और हम अमन के बढ़ावा के लिए काम कर रहे हैं। आज जब मैंने यह तक़रीर सुनी तो मुझे हर एक शब्द में अमन ही अमन नज़र आया। मुझे हर एक शब्द में बर्दाश्त और इन्सानियत की इक़दार नज़र आएं। अगर आप अमन, बर्दाश्त और इन्सानियत को आपस में एक स्थान पर कर दें तो फिर आप एक ख़ूबसूरत समाज पैदा कर देते हैं। फिर कहती हैं जो भी आप कहते हैं वह हमारे ही लाभ के लिए है। सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाली बात यह थी कि आपने समस्त समस्याएं वर्णन करने के बाद मज़हब से इस का हल पेश किया और बताया कि इन समस्त समस्याओं का हल ख़ुदा को पहचानने में है। आपने यह साबित किया है कि मज़हब मसला नहीं बल्कि समस्याओं का हल है।

एक जर्मन लड़की कहती हैं कि मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी कि इस तक़रीर में वर्तमान समस्याओं पर बात की गई। पहले भी कुछ सियासतदानों ने बात की लेकिन उनकी बातों में कोई वज़न नहीं था, वही मामूली बातें थीं जो कोई भी कह सकता है लेकिन यह तक़रीर बिलकुल विभिन्न थी। आपने वास्तविक समस्याओं के बारे में बात की। एटमी जंग की बात की। पर्यावरण की तब्दीलीयों की बात की। इमीग्रेशन की बात की और ये वे समस्याएं हैं जो आम हैं और फिर उनका हल भी बताया। मज़हब पर रोकें लगाने की बजाय मज़हब को बढ़ावा दिया जाए। लोग ख़ुदा की तरफ़ आएं , इस तरफ़ ध्यान दिलाया। फिर कहती हैं बहुत स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि आजकल जो जंगें हो रही हैं इस का मज़हब से कोई सम्बन्ध नहीं है। सयासी मामलों पर भी बड़ी रोशनी डाली। फिर यह कहा कि ताक़तवर देश कमज़ोर देशों से फ़ायदा उठाते हैं। कई बार यह लाभ ज़ाहिरी तौर पर उठाए जाते हैं। कई बार पोशीदा तौर पर उठाए जाते हैं और उनको मजबूर किया जाता है कि वह ताक़तवर देशों के हितों की रक्षा करें। यह स्टूडैंट हैं तो इस लिहाज़ से भी उन्होंने बड़ी अच्छी समीक्षा की है। इस का मतलब है लोग ग़ौर से सुनते भी हैं और फिर इस पर ग़ौर भी करते हैं।

फिर जर्मनी के एक ईसाई पादरी इन्द्रियास वाइस बरवट (Andreas Weisbrot) हैं । यह कहते हैं कि मैं जलसा सालाना से ,उन बहुत से दोस्ताना चेहरों से, इस ख़ुशखुलक़ी की फ़िज़ा से, इस महान इत्तिहाद और मुहब्बत से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। और फिर मेरी तक़रीर के बारे में कहते हैं कि इस तक़रीर ने मुझे हैरान कर के रख दिया। ऐटमी जंग के ख़तरे का मुझे इतना एहसास नहीं था। मेरा भी यही ख़्याल है कि हम सिर्फ उस वक़्त तरक़्क़ी कर सकते हैं जब हम समाजी इक़दार और अमन की तरफ़ ध्यान दें और मिलकर अमन की तलाश करें। इस मक़सद के लिए हमें एक मज़बूत समाज की ज़रूरत है जिसमें हम भाईचारा और बहुत सी आस्थाओं की फ़िज़ा को क़ायम करें और इस में विभिन्न धर्मों के मध्य बातचीत का एक अहम हिस्सा है

यह तो कुछ एक मिसालें मैंने बहुत सारी मिसालों में से ली थीं। अब जलसा के उमूमी विचार के बारे में भी कुछ मिसालें वर्णन कर देता हूँ

मेसीडोनिया (Macedonia)से एक वफ़द आया था जो 70 लोगों पर आधारित था। इस वफ़द में आठ पत्रकार भी शामिल थे। दो क्षेत्रीय टीवी और अन्य छः नैशनल टीवी या अन्य न्यूज़ एजैंसीज़ से जुड़े थे और उन्होंने जलसा की कार्रवाई के अतिरिक्त कुछ लोगों के इंटरव्यू भी लिए । मेरे से भी कुछ सवाल जवाब थे। पत्रकारों के अतिरिक्त वफ़द में पंद्रह ईसाई दोस्त थे। 23ग़ैर अहमदी मुसलमान थे और 24 अहमदी मुसलमान शामिल थे। ग़ैर अज़ जमाअत मेहमानों में से पाँच ने इस जलसा के दौरान इस कार्रवाई को देखकर और सारा प्रोग्राम देखकर बैअत भी कर ली। इन्हें पहले से भी तब्लीग़ की जा रही थी।

मेसीडोनिया वफ़द की एक औरत अलीगज़ांडरा दूनीवा साहिबा Aleksandra Doneva) पहली बार जलसा में शामिल हुईं। उनका अपना वर्णन का अंदाज़ है बड़ा शायराना भी फ़लसफ़ियाना भी। इसलिए मैंने उस को वर्णन करने के लिए रख लिया। कहती हैं घर वालों के बिना घर का क्या तसव्वुर हो सकता है? क्या आचरण के बिना इन्सानियत का तसव्वुर हो सकता है? इन्सान की हक़ीक़त मज़हब और अक़ीदे के बिना नहीं है और मुहब्बत के बिना इन्सानियत का क्या तसव्वुर हो सकता है? इन्सान की रूह की पाकीज़गी सिर्फ़ अमन में रहने और अमन को फैलाने से हासिल हो सकती है। इसी तरह रूह की पाकीज़गी भाईचारा, आपसी इज़्ज़त तथा सम्मान में छुपी है। इन्सान के लिए ज़रूरी है कि वह ख़ुदा पर यक़ीन रखे और ज़मीन पर भविष्य को बेहतर बनाए। यह एक ऐसा तरीक़ा है जिससे हम इन्सानियत की हिफ़ाज़त कर सकते हैं और जमाअत अहमदिया ये समस्त कार्य सरअंजाम दे रही है। अहमदी अमन को फैलाते हैं अमन की शिक्षा देते हैं। अख़लाक़ीयात को क़ायम कर रहे हैं और कोशिश कर रहे हैं कि मानव जाति ये समस्त कार्य सरअंजाम दें। अहमदियत लोगों को एक जगह इकट्ठा कर रही है। उनको इबादत की लौ लगाई है। अहमदियत यह चाहती है कि लोग रूहानियत में इज़ाफ़ा करने वाले हों। उनमें इत्तिहाद क़ायम हो। वे ख़ुदा के क़रीब हों और इस साल जलसा सालाना पर मैंने मुस्कुराते चेहरों के साथ बहुत ज़्यादा अच्छे लोग देखे जो हमें बहुत इज़्ज़त दे रहे थे। उनको इस बात का यक़ीन है कि अच्छे अख़लाक़ के साथ अच्छी ज़िन्दगी जी जा सकती है

कहती हैं कि मैं शुक्रगुज़ारी के जज़बात के साथ इस बात की गवाही देती हूँ कि मैंने ऐसे लोगों को देखा जिनका ख़ुदा पर यक़ीन और ईमान बहुत मज़बूत है। मुझे उम्मीद है कि आप ये नेक काम जारी रखेंगे, इस सिलसिले में ज़्यादा ध्यान और मुहब्बत जारी रखेंगे और फिर एक वक़्त आएगा और लोगों को इस बात का ज्ञान होगा कि ज़िन्दगी का वास्तविक मक़सद और वैल्यू (value) क्या है

यह एक ग़ैर अज़ जमाअत का विचार है और ये विचार हमें इस बात की तरफ़ लाने वाला होना चाहिए कि हम हक़ीक़त में अपनी ज़िन्दगी के मक़सद को पहचानने वाले हूँ और इस मक़सद को हासिल करने वाले भी हों।

मेसीडोनेन् वफ़द में शामिल एक टीवी के पत्रकार ज़ूरानचव ज़ूओरिनसकी (ZorancoZorinski) साहिब कहते हैं कि मैं दूसरी बार जलसा में शामिल हुआ हूँ और मेरे लिए बड़ा सम्मान है। जलसा के प्रबन्ध बहुत अच्छे थे। मेरे ख़्याल में जलसा के प्रबन्ध पिछले साल की तुलना में ज़्यादा अच्छे थे। फिर कहते हैं आपका जो ख़िताब था इस से में बहुत आन्नदित हुआ। हर शब्द इन्सानियत के लिए एक सबक़ था। यह एक विश्वव्यापी पैग़ाम है कि "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं।" फिर कहते हैं कि ख़ुदा पर ईमान रखना और समस्त इन्सानों की मदद करना यह ऐसा काम है जो समस्त लोगों के बीच मतभेदों को दूर कर देगा। फिर लिखते हैं कि जमाअत अहमदिया लोगों को सकारात्मक चीज़ें सिखाती है और फिर मेरी जो प्रैस कान्फ्रैंस थी उस के बार में कहते हैं कि पत्रकारों के जो उत्तर दिए वे इन्सानियत की बुनियादी इक़दार का इज़हार कर रहे थे। कहते हैं मैं भी पत्रकार हूँ, में किसी वक़्त आपका इंटरव्यू लेने की कोशिश करूँगा। फिर कहते हैं कि "अच्छी नसीहत करते हैं। मुझे उम्मीद है कि अन्य लोग अहमदियत स्वीकार करेंगे जो इन्सानियत की बेहतरी के लिए काम करेंगे। तो दुनिया को यह नज़र आ रहा है कि इस्लाम इंशा अल्लाह तआला अहमदियत के माध्यम से है।

फिर वोजो मानियोसकी (VojoManevski) साहिब कहते हैं कि मैंने गहराई में जा कर अहमदी मुसलमानों के पैग़ाम को समझा है। बतौर पत्रकार मैंने विभिन्न धर्मों में मिलती जुलती शिक्षाओं का जायज़ा लिया है। मज़हब की बुनियाद अल्लाह तआला से मुहब्बत और मानव जाति से मुहब्बत पर आधारित है। यह ऐसा पैग़ाम है जिसकी आज के दौर में बहुत ज़रूरत है। आज की दुनिया के बहुत से समस्याओं का हल जो दुनिया को सख़्त परेशान कर रहे हैं इस मुहब्बत के पैग़ाम में है। आज यूरोप का बहुत बड़ा मसला दायां पक्षा के सियासतदानों की ताक़त में इज़ाफ़ा है जिसका हल सिर्फ़ गुफ़्तगु से संभव है जो विभिन्न धर्मों , कल्चर सिवीलाइज़ेशन (नूCivilization) के मध्य हो। अगर हम ख़ुदा की तलाश करें तो हमें ज्ञान हो जाएगा कि हम में आपस में बहुत ज़्यादा फ़र्क़ नहीं है। फिर कहते हैं कि जितना हम ख़ुदा से दूर होंगे इतना ही हम इन्सानियत और लोगों से दूर होंगे। भौतिकता का दौर रुहानी ज़िन्दगी और आपस के सम्बन्धों को ख़त्म कर रहा है। इसलिए हम अपनी फ़ैमिली और दोस्तों की हिफ़ाज़त करें और सम्बन्धों की रक्षा करें।

फिर एक जानीरजीपोव (JaniRedjepov) साहिब भी हैं। कहते हैं कि अपनी फ़ैमली के साथ जलसा में शामिल हुआ हूँ। जलसा बहुत अच्छा रहा। जलसा एक शानदार अनुभव था। फिर कहते हैं मेसीडोनिया में मैंने जब पहली बार अहमदियत का पैग़ाम सुना तो मुझे एहसास हो गया था कि अहमदियत का पैग़ाम लोगों के लिए सकारात्मक रहनुमाई का काम है। पहले मेरी फ़ैमिली ने इस पैग़ाम को स्वीकार किया और फिर मेरी रहनुमाई की। जलसा सालाना में शिरकत का इंतिज़ाम करने पर आपका शुक्रगुज़ार हूँ।

फिर एक तानीया (Tanja) साहिबा हैं कहती हैं कि मैं पहली बार जलसा में शामिल हुई हूँ। यहां मेरे लिए सब कुछ नया था और बहुत अच्छा था। समस्त प्रबन्ध हर लिहाज़ से बहुत अच्छे थे विशेष रूप से काम करने वाले रज़ाकार उन का अंदाज़ बहुत दोस्ताना था। मुस्कुराते चेहरों के साथ पेश आ रहे थे और बड़े अच्छे आचरण से ये काम कर रहे थे

फिर बुलग़ारिया के एक यूनीवर्सिटी के छात्र हैं ,कहते हैं लोग बहुत हमदर्द थे जिसकी वजह से मैं अब यहां हूँ। बैअत की तक़रीब को में एक देखने वाले के तौर पर देख रहा था। मेरे पास शब्द नहीं कि मैं अपनी भावनाओं का इज़हार कर सकूं। लोगों का इस रंग में इकट्ठा होना एक शानदार बात है

बुलग़ारिया से49 लोगों पर आधारित वफ़द शामिल हुआ था इस में 15 अहमदी थे और 34 ग़ैर अज़ जमाअत और ईसाई लोगों शामिल थे। वफ़द में शामिल एक ईसाई औरत जूलिया (Yulia) साहिबा कहती हैं । मैं इस बात को सोच कर बहुत जज़बाती हो रही हूँ कि मैं भी अहमदिया जमाअत के जलसा पर इन हज़ारों शामिल होने वालों के साथ शामिल हुई हूँ। बेशक में ईसाई हूँ लेकिन मेरी तक़रीर के बारे में कह रही हैं कि मुझे यह तक़रीर बहुत पसंद आई। आपकी दुआएं दिल पर असर करने वाली थीं। तिलावत क़ुरआन करीम भी मुझे बहुत पसंद आई। इस का तर्जुमा भी। प्रशंसा योग्य बात यह है कि छात्रों को इनाम भी आपने अपने हाथ से दिए और फिर आगे भी दुआ दे रहे हैं कि आपकी दुआएं स्वीकार हों।

बुल्गारियन वफ़द की एक औरत करा समीरा (Krasrmira) साहिबा कहती हैं मुझे तीसरी बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का अवसर मिला है और हर साल मुझे नई से नई बातें सीखने को मिलती ही। मैं तक़ारीर को बहुत ग़ौर से सुनती हूँ क्योंकि मैं एक फ़िज़ियो थराप्सट और सायका लोजिस्ट भी हूँ। मैं इन तक़रीरों में बताई जाने वाली जमाअत अहमदिया की शिक्षा के माध्यम से अपने हर मरीज़ के समस्याओं का बेहतर रंग में हल कर सकती हूँ और में अपने लिए भी मुफ़ीद नसीहतें इकट्ठी कर के ले जाती हूँ

बुल्गारियन वफ़द की एक ईसाई औरत इवनका (Ivanka) साहिबा कहती हैं। मुझे पहली बार जलसा सालाना जर्मनी में शामिल होने का अवसर मिला। मैं सारी चीज़ें देखकर हक़ीक़त में हैरान रह गई हूँ। खासतौर पर इन बच्चों से बहुत प्रभावित हुई हूँ जो गिलासों में हमें पानी देते थे

फिर एक औरत गालिया (Galia) साहिबा कहती हैं मैं तीनों दिन जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हुई। मैं जलसा की मेहमान नवाज़ी और प्रबन्धों से बेहद प्रभावित हूँ। मैं इन अच्छे आचरण और नेक इरादे रखने वाले लोगों से भी बहुत प्रभावित हुई हूँ जिनसे मैं जलसा के अवसर पर मिली।

हंगरी से भी इस साल वफ़द आया जिसमें आठ मेहमान थे और ग्यारह अहमदी शामिल थे और सज़वा विनसी (Szava Vince) साहिब जिनका सम्बन्ध रूमा क़ौम से है और वह कहते हैं कि अपनी क़ौम की भलाई के लिए और उनकी लीगल (legal)मदद के लिए हमने एक संस्था बनाई है और इस संस्था के सौलाह हज़ार से अधिक मैंबर हैं। जलसा में पहली बार शामिल हुए। यह कहते हैं कि उनको अपने काम की वजह से विभिन्न लोगों से मिलना पड़ता है। यह विभिन्न आयोजनों में जाते हैं उनके प्रोग्रामों में जाते हैं। यहूदियों के प्रोग्रामों में भी गए। मुसलमानों के प्रोग्रामों में भी गए। ईसाइयों के पास भी गए। उन्होंने बताया कि जो मुहब्बत और इन्सानियत का सम्मान , बराबरी और भाईचारा यहां आकर देखा है ऐसा कभी अपनी ज़िन्दगी में नहीं देखा और ना ही किसी और प्रोग्राम में देखा। उन्होंने जमाअत का शुक्रिया अदा किया कि जमाअत ने उन्हें अवसर दिया कि यहां आकर ख़ुद देखें कि हम जो कहते हैं "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं।" उस का व्यवहारिक इज़हार भी यहां हो रहा है। यह बताते हैं कि यह अनुभव उनके लिए एक लाइफटाइम अनुभव है। इस को भुलाया नहीं जा सकता और यह जलसा में शामिल होने की वजह से ख़ास जज़बाती कैफ़ीयत में हैं। फिर कहते हैं अपने मुल्क में जहां मुसलमान मुहाजरीन के समस्याओं की वजह से उनके लिए ख़ास नफ़रत है हम मुसलमानों के लिए पहले से भी बढ़कर आवाज़ उठाते रहें। पहले भी आवाज़ उठाते रहे हैं लेकिन अब तो मज़ीद ज़ोर और शोर के साथ आवाज़ उठाएँगे कि वे मुसलमान जिनकी बातें मीडिया करता है ये बिलकुल ग़लत बातें हैं।

फिर वफ़ा हुस्न शर्मानी साहिबा यमन की हैं। अपने बेटे और माता के साथ हिज्रत कर के हंगरी आ गई हैं। यह कहती हैं कि जलसा में पिछले साल भी और इस साल भी शामिल हुई थी। और पिछली बार जब ये औरतों की तरफ़ गई थीं तो कहती हैं कि उन्होंने अपने आपको ज़्यादा comfortable महसूस किया था तो इस साल उन्होंने औरतों में जा कर वहीं सारे प्रोग्राम सुने और कहती हैं उनके लिए एक ख़ास रूहानियत से भरा हुआ और जज़बाती माहौल था।

फिर एक मेहमान बेसम जोज़ी (BesimGjozi) साहिब हैं। आख़िरी रोज़ बैअत कर के जमाअत में शामिल हुए और कहते हैं कि इस के लिए मैं अल्लाह तआला का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ। एक और मेहमान सिनन बरेशनी (SinanBreshanaj) साहिब कहते हैं कि मेरे जमाअत में शामिल होने का कारण ही वह मुलाक़ात थी जो कुछ साल पहले मेरे से उनकी हुई। कहते हैं इस वक़्त से उन पर असर था जिसके बाद यह हर साल जर्मनी के जलसा में शामिल होते हैं।

दूसरे एक अहमदी दोस्त बेकम बेतसी (BekimBici) साहिब हैं। वह कहते हैं कि मैंने 2004 ई में बैअत की। जर्नलिज़म में ग्रेजवाएशन में उच्च कामयाबी हासिल की और इस आधार पर 2016 ई के जलसा सालाना पर मैंने मैडल भी हासिल किया। इस के बाद मैंने अल्बानिया में ऑनलाइन अख़बारों में बतौर पत्रकार काम किया। पिछले साल जलसा सालाना पर आने के लिए जब मैंने छुट्टी की दरख़ास्त दी तो मन्ज़ूर नहीं हुई। इस पर मैंने काम से इस्तीफ़ा दे दिया क्योंकि मैं इस जलसा सालाना से गैर हाज़िर नहीं हो सकता था। कहते हैं अल्लाह तआला ने उसी दिन मेरे लिए दूसरी मीडिया कंपनी में काम दिला दिया जहां पर यह शर्त भी मंज़ूर कर ली गई कि में इस साल जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हो कर वापसी के बाद काम शुरू कर सकता हूँ। कहते हैं इसी तरह इस साल भी सिर्फ चार माह हुए थे

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

कि एक ऑनलाइन अख़बार में काम कर रहा था। कंपनी के नियमों के अनुसार छ: माह से पहले छुट्टी नहीं मिल सकती थी। फिर भी मैंने जलसा के लिए दरख़ास्त दी जो मंज़ूर नहीं हुई। मैंने इस्तीफ़ा दे दिया और इसी दिन मुझे तीन और कंपनियों की तरफ़ से काम की ऑफ़र मिली। अत: इस पर मैंने एक जगह इस शर्त के साथ काम स्वीकार कर लिया कि मैं जलसा सालाना जर्मनी में शामिल हो कर वापस आने के बाद काम शुरू करूँगा। अत: मेरी शर्त मंज़ूर कर ली गई। यह है ईमान और धर्म को दुनिया पर मुक़द्दम करने की हक़ीक़ी मिसाल जो नए आने वाले भी क़ायम कर हैं।

फिर एक अहमदी दोस्त गज़ीम मुज़ाके (Gzim Muzhaqi) साहिब जिनका सम्बन्ध लामज़हब सोसाइटी से था। कुछ साल पहले उनका जमाअत से सम्पर्क हुआ। मज़हब और विशेष रूप से इस्लाम के बारे में दलीलें जो जमाअत अहमदिया देती है वह उन्हें बहुत अक्ल वाली लगीं, बहुत पसंद आईं। इस से पहले मौलवियों की कहानियों की वजह से उनका दिल मज़हब से बेज़ार था। अत: कुछ साल पहले उन्होंने बैअत की और अब धीरे-धीरे इस्लामी शआर की पाबंदी कर रहे हैं। कहते हैं कि जलसा सालाना मुझे बहुत ख़ास लगा। मेहमान-नवाज़ी और प्रबन्ध हर साल की तरह बहुत ही उच्च थे और यह कहते हैं कि लजना में मेरा ख़िताब और जो समापन ख़िताब था उसने मुझे बड़ा प्रभावित किया और यह पैग़ाम हम मर्दों को हमेशा याद चाहिए।

फिर एक मेहमान एलेड्र चूलानजी (ILIR CYLANDJI) हैं। अल्बानियन हैं। जर्मनी में रहते हैं। वह कहते हैं जलसा सालाना हर अहमदी मुसलमान के लिए एक महान रुहानी इज्तिमा है जिसमें जमाअत के लोगों के अतिरिक्त अन्य धर्मों और क़ौमों से सम्बन्ध रखने वाले लोगों की एक बड़ी संख्या शामिल होती है। जलसा सालाना में शामिल हो कर उन्हें जहां इस्लाम की बुनियादी शिक्षाओं से परिचय हासिल होता है वहीं जमाअत अहमदिया में क़ायम निज़ाम ख़िलाफत के माध्यम से इन ख़ूबसूरत शिक्षाएं के व्यावहारिक नमूने देखने का भी अनुभव होता है। कहते हैं इन तीन दिनों के दौरान मर्दों और औरतें के जलसा गाह में सिर्फ इज्लासों का आयोजन होता है और मौजूदा ज़माने के परिवर्तनों और चैलेंजिज़ के मुक़ाबला इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा को पेश किया जाता है। कहते हैं मैं एक अहमदी मुसलमान होने के नाते सारा साल इस रुहानी जलसा का बड़े एहतिमाम से इंतज़ार करता हूँ क्योंकि यहां एक हक़ीक़ी भाईचारा की रूह नज़र आती है जिसे वर्णन करना नामुमकिन है और कहते हैं कि निष्कपट और फ़ितरी मुहब्बत का इज़हार जमाअत के सारे लोगों की तरफ से होता है। इस जलसा में आकर मुझे यूं लगता है मानो में जन्नत में हूँ और दुनिया का सबसे ख़ुश-क़िस्मत इन्सान हूँ और अगले साल के जलसा का बड़ी व्याकुलता से मैं इंतज़ार कर रहा हूँ।

फिर जॉर्जिया का वफ़द था जो 85 लोगों पर आधारित था। रशिया के किसी भी देश से आने वाला यह सबसे बड़ा वफ़द था। एक फ़लाही इदारे के चेयरमैन बेसू (Besso) साहिब कहते हैं कि बहुत से अहमदी लोगों से बात करने का अवसर मिला और मैंने बातचीत में यह जायज़ा लेने की कोशिश की कि यह जमाअत किस क़दर मज़हबी रवादारी का ख़्याल रखने वाली है। इस उद्देश्य से दो अहमदियों से बातचीत की और इस बातचीत के दौरान मैंने उन्हें अचानक बताया कि मैं मु-सलमान नहीं हूँ बल्कि ईसाई हूँ। मेरा ख़्याल था कि यह जान कर उन लोगों का रवैय्या बदल जाएगा लेकिन में बहुत हैरान हुआ कि अहमदी दोस्त जिस तरह पहले अच्छे आचरण से बात कर रहे थे इसी तरह अपने अख़लाक़ का इज़हार करते रहे और किसी किस्म के द्वैष का इज़हार नहीं किया। इस तरह भी ग़ैर लोग जो हैं हमें आज़माने की कोशिश करते हैं

जॉर्जिया के वफ़द में धार्मिक उलूम की छात्रा नानू का (Nanuka) साहिबा भी शामिल थीं और बैअत के आयोजन के बारे में अपनी भावनाएं वर्णन करती हैं कि बैअत का आयोजन भावनाओं से भरपूर था। मुझे मज़हबी इत्तिहाद का एक नज़ारा देखने को मिला और मालूम हुआ कि किस तरह विभिन्न रंग तथा नस्ल के लोग अमन के साथ इकट्ठे रह सकते हैं। मैं धार्मिक ज्ञान हासिल कर रही हूँ। जलसा पर पहली बार आई हूँ और मेरा यक़ीन है कि यह जलसा अमन को हासिल करने का एक बेहतरीन माध्यम है

फिर एक और औरत हैं नाना कुरदिआनी (Nana Kurdiani) साहिबा कहती हैं मैं ना तो मुसलमान हूँ और ना ही ईसाई हूँ लेकिन इस जलसा पर आने के बाद में अपने आपको इस्लाम की तरफ़ झुका हुआ देखती हूँ और मैं यह सोचने पर मजबूर हूँ कि मैं अपने मज़हब के बारे में कुछ फ़ैसला करूँ। फिर जॉर्जिया से एक यूनीवर्सिटी छात्र हैं जूरजीव (Georgio) साहिब यह एक इमाम का भतीजा है और यह भी कहते हैं कि मैं नाम का मुसलमान हूँ लेकिन अब जलसा पर शामिल हो कर इमाम जमाअत अहमदिया की मुहब्बत को देखकर मैं जमाअत अहमदिया के बारे में और अधिक अध्यनन करूँगा

कोसोवो से भी एक वफ़द आया हुआ था 45 लोगों पर आधारित था।30 लोग इस में अहमदी थे15 ग़ैर अज़ जमाअत थे। एक दोस्त मिस्टर शेप ज़िक्र जी (Mr. ShaipZeqiraji) साहिब दूसरी बार जलसा में शामिल हुए। कहते हैं कि जब मुझे इत्तिला मिली कि जलसा में शामिल होना है तो यह बहुत ख़ुश हुए मगर इस सफ़र के खर्च जब सामने आए तो बहुत कश्मकश में पड़ गया लेकिन फिर कहते हैं ख़लीफ़ा वक़्त से मिलना और जलसा में शामिल होना मेरी एक तड़प थी। इसलिए वह कहते हैं मैंने अपनी गाय बेची और जलसा में शामिल होने के खर्च पूरे किए। इस तरह भी लोग अहमदी होने के बाद क़ुर्बानी कर के जलसा में आने की कोशिश करते हैं। पुराने ज़माने की मिसालें हैं जो यह क़ायम कर हैं।

कोसोवो के वफ़द में एक दोस्त मिस्टर सिकन्दर अस्सलानी (SkenderAsllani) साहिब भी थे जो अल्बानियन ज़बान और लिटरेचर के उस्ताद हैं। उन्हें इस साल बैअत करने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। कहते हैं कि मुझे तो ढूढ़ने पर भी इन जलसा के प्रबन्धों में कोई नुक़्स नहीं मिला। तक़रीर का स्तर बहुत उम्दा था और फिर मेरी तक़रीर का भी कहते हैं कि बड़ा प्रभावित हुआ। फिर कहते हैं बैअत करना एक इनाम है जिसकी क़दर हम सबको करनी चाहिए क्योंकि इस माहौल में एक हाथ पर जमा होना ही कामयाबी की कुंजी है

मालटा से जलसा में शामिल होने वाली तीन औरतों, औरतों की मार्की में भी गईं। कहती हैं कि हमारा बहुत ख़्याल रखा गया। बहुत बार हमें पूछा गया। औरतों की मार्की में एक फ़ैमली का माहौल था। ऐसे था कि जैसे हम एक दूसरे को बहुत अच्छी तरह शायद सदियों से जानते हैं मगर हमारी तो पहली बार मुलाक़ात हो रही थी

फिर यह कहती हैं कि औरतों की मार्की मैं ज़्यादा आसानी थी और हमें दोनों तरफ़ के माहौल को अनुभव करने का अवसर मिला और हमें इस्लामी शिक्षाएं जिसमें मर्दो औरतों के लिए अलग इंतिज़ाम किया जाता है इस की सही और गहरी हिक्मत और फ़िलासफ़ी को समझने का अवसर मिला और हम अपने अनुभव की बिना पर भी यह कह सकती हैं कि इस्लामी शिक्षाएं बहुत गहरी और हिक्मत से भरी हुई हैं और औरतें अलग जगह ज़्यादा आसानी और इत्मीनान महसूस करती हैं और उन्हें अपने प्रबन्धों को सँभालने और अपनी क़ाबिलियतों के जोहर दिखाने का व्यापक अवसर है।

अत: ग़ैर भी अब इस बात को मानने लग गए हैं कि औरतों और मर्दों की जो अलैहदगी है और जो प्रबन्ध हैं यह हक़ीक़त में ज़रूरी हैं और हमारी नौजवान नस्ल की कुछ लड़कियों को जो कुछ विचार आते हैं कि इकट्ठा क्यों नहीं होता और इकट्ठे क्यों नहीं? यह आज़ादी नहीं है? उनको भी सोचना चाहिए

मालटा से जलसा में शिरकत करने वाली एक मेहमान औरत जिनकी अभी अभी शादी हुई है कहती हैं कि आपका औरतों से जो ख़िताब था इस से मैं बड़ी प्रभावित हुई। आपने मर्दो औरतों के हुक़ूक़ और ज़िम्मेदारीयों की तरफ़ ध्यान दिलाया। घरों

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and famil

jamaat Ahmadiyya idra,Dist: Proliya. West Bengal

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्ररी जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

में समस्याएं पेश आती रहती हैं और इस सिलसिले में आपकी यह रहनुमाई हमेशा के लिए बहुत मुफ़ीद साबित होगी। फिर कहती हैं कि इस बारे में यह वर्णन किया कि इस्लाम की शादी से पहले पाकीज़गी और इफ़्फ़त की शिक्षा बहुत ही हिकमत वाली और सार गर्भित है। यह बड़ी ज़रूरी चीज़ है। रुहानी और जिस्मानी पाकीज़गी और तक़्वा और तहारत की तरफ़ भी हमारी रहनुमाई की। फिर कहती हैं अगर कभी दोबारा जलसा में शामिल हुई तो सारा वक़्त औरतों की मार्की मैं गुज़ारूँगी क्योंकि वहां जो माहौल मयस्सर आया वह बहुत ही धार्मिक और रुहानी था

किर्गीज़स्तान से आने वाले एक मेहमान वर्णन करते हैं कि जलसा में शामिल हो कर ग़ैरमामूली एहसासात थे। अहमदी होने से पहले मुझे कभी भी रोना नहीं आया मगर सिर्फ कादियान और जर्मनी में रोना आया। महसूस हो रहा था कि दिल में एक नर्मी और तबदीली पैदा हुई है। हर एक जो बैअत करता है इस के माध्यम से मेरे ईमान में इज़ाफ़ा होता है। मैं पहले मौलवी था , जब जमाअत अहमदिया की किताबों का अध्यनन किया तो सारी बातें जो कुरआन करीम में दज्जाल और मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम इत्यादि के बारे में वर्णन हुई हैं इन सब बातों की हक़ीक़त मालूम हुई। बैअत में ऐसा लगा मुझ पर ठंडा पानी पड़ रहा है और अब मैं वास्तविक और हक़ीक़ी मुसलमान हो गया हूँ।

फिर ताजिकस्तान से एक मेहमान अब्दुलसत्तार Abdussator) थे कहते हैं मैंने अहमदियों के बारे में सुना था कि वह मुसलमान नहीं हैं और शराब को जायज़ समझते हैं। जलसा में शामिल होने से पहले अहमदियों की मस्जिद सुबहान देखी। यह वहां जर्मनी में है और इस में नमाज़ पढ़ी तो पता लगा कि यह लोग मुसलमान हैं और पाँच अरकाने दीन पर अनुकरण करते हैं। जलसा में शामिल हो कर पता चला कि यह इमाम महदी को मानते हैं और बिलकुल शराब नहीं पीते और क़ुरआन करीम के आदेशों पर अनुकरण करते हैं। यहां जलसा में शामिल होने के बाद बहुत ज़्यादा मालूमात अहमदिया जमाअत के बारे में मिलीं और मैं बुनियादी तौर पर आप लोगों को मुसलमान समझने लगा हूँ। अरकाने दीन और अरकाने इस्लाम वही हैं जो मुसलमानों के होते हैं। यहां पर हज के बाद दूसरी बार इतने मुसलमानों को इकट्ठे देखा।

लिथवीनया (Lithuania) से जो वफ़द आया था 58 लोगों पर आधारित था। 46 ग़ैर अहमदी थे।12 अहमदी थे। वहां से एक पतरस या नौ लियोन्स (PetrasJanulionis)अपने ख़्यालात का इज़हार करते हुए कहते हैं कि जलसा पर आने से पहले इस्लाम के बारे में मेरा विचार कुछ अच्छा ना था लेकिन जलसा में शालि होने के बाद इस्लाम के बारे में मेरे भावनाएं सकारात्मक हो गई हैं। मुझे जलसा में इस बात का एहसास हुआ कि मुसलमान अपने अक़ीदे के साथ बहुत संजीदा हैं बल्कि में यह कहना चाहूँगा कि ईसाईयों की तुलना में बहुत ज़्यादा संजीदा हैं

फिर लिथवीनया की एक साहिबा मानीफ़ा (Manefa) साहिबा हैं । कहती हैं कि जलसा में शामिल होने से पहले इस्लाम के बारे में शंका में थी क्योंकि कुछ मुसलमान बहुत अधिक ग़ुस्से वाले और दूसरे मज़हब के बारे में बर्दाश्त की ताकत न रखने का शिकार होते हैं लेकिन जलसा में शामिल होने के बाद मुझे अंदाज़ा हुआ है कि अहमदी मुसलमान दूसरों की राय और मज़हब का सम्मान करने वाले और समस्त इन्सानियत में अमन और मुहब्बत बांटने वाले लोग हैं

लिथवीनया से एक लायर कंपनी के प्रमुख आए हुए थे। सारोनस (Sarunas) साहिब कहते हैं जलसा सालाना बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस में इस्लाम की अमन वाली शिक्षा का पता चलता है और इस्लाम के बारे में जो ग़लत धारणाएं हैं इस का को तोड़ता है

सीरिया (Syria)के एक दोस्त जिन्होंने जनवरी 2019 ई में बैअत की थी वह बैअत की अपनी घटना वर्णन करते हुए कहते हैं कि उनके पिता ने2008 ई में सीरिया में बैअत की थी। फिर एक भाई ने भी बैअत कर ली लेकिन में तीन बार जलसा पर आया हूँ और लोगों को भावनाएं से रोते देखकर हैरान होता था और हँसता था कि ये लोग क्यों रोते हैं लेकिन मैं मुख़ालिफ़ ही रहा और बैअत नहीं की। फिर ख़ुदा तआला से दुआ की कि अगर यह जमाअत सच्ची है तो अल्लाह तआला ख़ुद ही रहनुमाई फ़र्मा दे। इस पर मैंने ख़्वाब में देखा कि इसी मुलाक़ात जैसा अवसर है। लोग बैठे हैं। मैं पहली सफ़ में बैठा हूँ। सब दोस्त ख़ामोश हैं और ये कहते हैं कि आप आते हैं और मैंने अपने आप रोना शुरू कर दिया तो इस पर मैंने उन्हें अपने पास बुलाया और प्यार से पूछा और कहा कि इधर आ के पास बैठ जाओ। कहते हैं इस पर मैं बेदार हुआ तो बैअत के लिए सन्तोष हो गया और बैअत कर ली। यह घटना ख़ुद भी मुझे सुनाई और इस वक़्त भी मुलाक़ात के दौरान बड़े भावनात्मक थीं। बाद में भी जब भी उन पर नज़र पड़ती थी बड़े भावनात्मक हो जाते थे

बेल्जियम से आने वाले एक नौजवान दोस्त लौख़ बालन साहिब कहते हैं कि मैंने कुछ महीने पहले बैअत की थी। पहली बार जलसा में शामिल हुआ हूँ। इस जलसा में शामिल हो कर हैरान रह गया कि इतना ख़ूबसूरत भाईचारा का माहौल है। पहले जो मैंने सुना था उस की हक़ीक़ी तस्वीर इस जलसा में देखने को मिली और बड़ा ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि रुहानी माहौल में शामिल हुआ।

सेनेगाल से आने वाले एक मेहमान थे जो वहां अपने इलाक़े में कमिशनर हैं। उन्होंने मेरी मुलाक़ात का ज़िक्र किया। कहते हैं कि मुलाक़ात के बाद में बड़ा ख़ुश हुआ और आप की जो तक़रीर है वह मुहब्बत और तौहीद का दर्स है इस से बड़ा प्रभावित हूँ। कहते हैं अगर मैं जलसा ना देखता और आपसे ना मिलता तो मैं अपनी ज़िन्दगी में एक बहुत बड़ी कमी महसूस करता और आज मैं समझता हूँ कि मेरी ज़िन्दगी का मिशन मुकम्मल हो गया है

यह एक कश्ती लाए हुए थे और वह अपनी गोद में ले के बैठे हुए थे। मेरे पूछने पर उन्होंने कहा कि यह तोहफ़ा है। हम आपके लिए लाए हैं और कहा कि यह कश्ती अमन की किश्ती है। मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं की किश्ती है। अब जो इस में सवार होगा वही अमन पाएगा और यह अहमदियत की किश्ती है और किश्ती का तोहफ़ा देने का एक दूसरा मतलब यह भी था कि हमारे देश की अर्थ व्यवस्था इस से जुड़ी है। वहां मछवारे ज़्यादा हैं। अत: हमारे देश के लिए ख़ास दुआ करें

फिर उनके साथ एक और मेहमान थे वह वहां ऐस्टैबलिशमैंट के सेहत विभाग के डायरेक्टर हैं और उन्होंने हस्पताल के हवाले से भी मेरा शुक्रिया अदा किया और कहा कि यहां आकर उन्होंने इस्लाम के बारे में बहुत कुछ देखा है फिर कहते हैं कि मैंने दुनिया के बहुत से देशों देखे हैं। मज़हबी और स्यासी इज्तिमा भी देखे हैं। अमरीका और यूरोप सब जगहों पर गया हूँ लेकिन आज तक ऐसा निज़ाम, ऐसा हक़ीक़ी इस्लाम और इस्लाम की ऐसी तस्वीर इस से पहले कभी नहीं देखी। ऐसी इताअत कभी नहीं देखी जो मैंने यहां लोगों में देखी है और ख़िलाफ़त से ऐसी मुहब्बत मैंने नहीं देखी। कहते हैं में यह अच्छी तरह समझ कर कह सकता हूँ कि दुनिया में किसी जगह भी कोई अपने स्यासी या मज़हबी लीडर से ऐसा प्यार नहीं करता जितना यहां मैंने अपने ख़लीफ़ा से लोगों को करते देखा है और मैं इस सच्चाई को स्वीकार करता हूँ।

फिर एक डाक्टर मूरजाओ (Mordiaw) साहिब थे। कहते हैं हम दिल से इस सच्चाई को स्वीकार करते हैं। जो हमने देखा है यह एक ऐसी सच्चाई है कि जिसको कोई भी रद्द नहीं कर सकता और हम और हमारे दिल आज से आपके साथ हैं। जो हमने देखा है और आपसे सुना है इस को हम महसूस करते हैं और इस पर अनुकरण करने की कोशिश करेंगे।

बोसनिया का वफ़द भी शामिल हुआ जिसमें 74 लोग शामिल थे। एक स्थानीय एन जी ओ के संस्थापक यासमीन सपाहेच (YasminSpahich) साहिब हैं। यह उनके सदर हैं। कहते हैं कि आपका इस्लाम और इस्लाम के संस्थापक से इशक़ और इस इशक़ को फैलाना आपके मुहब्बत बिखेरने वाले शब्दों में होता है। इसी तरह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सीरत तय्यबा के हवाले से नसीहत दिल को छू रही थी। यही वह काम है जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम करते थे। फिर यह कहते हैं कि मैं ख़ुदा तआला से दुआ करता हूँ कि अगला जलसा इस से भी बेहतर हो और यह जलसा उम्मते मुहम्मदिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में क़ुव्वत और इत्तिहाद पैदा करने का कारण हो। फिर यमीना चाओशैवेच (Emina Chaoshevich) साहिबा हैं। कहती हैं मुझे जलसा में शामिल हो कर यह अनुभव हो गया कि जलसा के माहौल में वह क़ुव्वत और तासीर है कि रुहानी तौर पर मुर्दा इन्सान में ज़िन्दगी की रूह चली आती है।

फिर एलमा करेमेश (Elma Krehmiche) साहिबा हैं कहती हैं मैं इस अवसर से लाभ उठाते हुए करते हुए जमाअत अहमदिया का शुक्र अदा करना चाहती हूँ कि मुझे इस महान जलसा में शामिल होने की दावत दी गई। मेहमान-नवाज़ी और जलसा के बारे में समस्त प्रबन्धों ने मुझे हैरत अंगेज़ तौर पर प्रभावित किया है और विशेष रूप से मेरा यह weekend ऐसे लोगों के बीच गुज़रा है जिनके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट थी।

फिर वहां बैअत का आयोजन भी हुआ जिस में 16 देशों से सम्बन्ध रखने वाले 37 लोगों ने बैअत की तौफ़ीक़ पाई जिसमें अल्बानिया ,सर्बिया, हॉलैंड, जर्मनी, चेचिनया, रुमानीया, कोसोवो, बेल्जियम, सीरिया, तुर्की, उज़बेकिस्तान, लेबनान,

सेनेगाल, घाना, गेम्बया, गिनी कनाकरी शामिल थे

एक दोस्त मिस्टर लबीनो टे (Labinot)कोसोवो के एक हाई स्कूल के प्रिंसिपल हैं। वह कहते हैं कि जलसा सालाना ने मुझ पर एक ख़ास भावनात्मक असर डाला है और खासतौर पर जब आपने वहां कहा कि बैठ जाओ तो इतनी बड़ी भीड़ फ़ौरन बैठ गई। यह दुनिया में कहीं देखने में नहीं मिला। फिर यह कहते हैं कि जलसा में शामिल होने के बाद तो मैं यह कहता हूँ कि जलसा तीन दिन का नहीं होना चाहिए बल्कि तीस दिन का होना चाहिए और कहते हैं बैअत करने का मेरा इरादा नहीं था लेकिन मैं सब चीज़ से और फिर इस से इतना प्रभावित हुआ हूँ कि बैअत के दौरान मेरी तबीयत पर ऐसा असर हुआ कि ख़ुद बख़ुद ही मेरा हाथ उठ गया और अलफ़ाज़ दोहराने शुरू कर दिए और अब मैंने बैअत कर ली। सिर्फ ज़ाहिरी तौर पर नहीं बल्कि हक़ीक़त में ली है।

फिर आज़रबाईजान से आग़ासिफ़ साहिब हैं। यह कहते हैं मैंने कभी सोचा भी ना था कि मैं रूहानियत की इतनी बुलंदियों को देखूँगा। मुरब्बी महमूद साहिब ने मुझे जमाअत के बारे में और इस के अक़ीदे के बारे में मालूमात देनी शुरू कीं। मुझे यह सब बनावटी और झूठ लगा। मैंने इन बातों को सुनते ही इनकार कर दिया लेकिन मालूम नहीं था कि सच की यह क़ुव्वत मुझे जल्द अपनी तरफ़ खींच लेगी। यक़ीनी तौर पर जमाअत की सच्चाई और इस के पेश किए जाने वाली दलीलें बहुत दृढ़ हैं। वीडीयोज़ में देखे जाने वाले नज़ारे यहां आकर हक़ीक़त में देखने का अवसर मिला। जलसा में बहुत से लोगों से मिलने का अवसर मिला लेकिन हर एक से मिलकर एक ही जैसा ख़ुशगवार एहसास होता था जो यक़ीनी तौर पर दलील है कि यह एक जमाअत है। अल्लाह तआला ने मुझे आपके हाथ पर बैअत का सौभाग्य प्रदान किया। पहली बार जब मुझे सूचना दी गई तो मुझे यक़ीन नहीं आया। मैंने चार पाँच बार पूछा क्या वास्तव में ख़लीफ़ वक़्त के हाथ पर हाथ रख के बैअत करूँगा। कहते हैं कि मेरी आँखों में आँसू आ गए और साथ ही परेशान हो गया कि मैं तो इस योग्य नहीं। फिर मैंने दुरूद शरीफ़ और इस्तिग़फ़ार का विर्द करना शुरू किया। बैअत का अवसर आने तक मैं ना खा सका और ना ही कुछ और कर सका। अल्हमदो लिल्लाह बैअत का अवसर भी आ गया। अल्लाह तआला ने मुझे ऐसी क़ुव्वत बख़्शी, रुहानी अवसर से नवाज़ा कि मैं बैअत के बाद सिज्दे में गिर गया और उस ज़ात का शुक्र अदा किया जिसने अपने इस तुच्छ गुनाहगार बंदे को आपके हाथ पर बैअत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। जलसा के बाद मुझे मालूम हुआ कि फिर मुलाक़ात का एक अवसर भी मिल जाएगा। मैं सारा दिन कई सवाल सोचता रहा लेकिन मुलाक़ात हुई तो मैं भूल गया और सिर्फ सबसे ज़्यादा फ़िक्रमंद करने वाला सवाल याद रहा कि जलसा के बाद अपने देश जाने के बाद क्या रूहानियत का स्तर क़ायम रहेगा। तो इस पर आपने कहा कि इस को क़ायम रखने के लिए सूरत फ़ातिहा اهدنا الصراط المستقيم صراط الذين انعمت عليهم को बाक़ायदगी से पढ़ते रहा करो और कहते हैं मैं यहां से यह वादा कर के जा रहा हूँ कि अगले जलसा तक इस नसीहत पर अनुकरण करता रहूँगा और अगले जलसा पर आकर यह बताऊँगा कि मैंने नसीहत पर अनुकरण किया है। अल्लाह तआला उनके इख़लास तथा वफ़ा को बढ़ाता रहे।

कोसोवो के वफ़द में एक दोस्त थे जो पहली बार शामिल हुए। कहते हैं अपने एहसासात और भावनाओं को शब्दों में वर्णन करने में असमर्थ हूँ। मेरी ज़िन्दगी में कब से एक ख़ाहिश थी कि कोई ऐसा वजूद मुझे मिले जो दुनिया की फ़िक्र करने वाला हो और जिससे मिलकर मेरी समस्त समस्याएं और तकलीफ़ें हल हो जाएं। मेरा इस जलसा में शामिल होना ख़ुदाई सहायता से था और बैअत करते हुए मुझे ऐसे लग रहा था मानो कि मैं ख़ुदा के क़रीब हो गया हूँ

फिर अल्बानिया के पल्लूओमब (Pellumb) साहिब हैं। कहते हैं मैंने आपके हाथ पर बैअत की और जमाअत में दाख़िल होने की सआदत पाई। अल्लाह तआला का उस के लिए बेहद शुक्रगुज़ार हूँ कि मुझे अहमदियत में आने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। कहते हैं कि मैं अल्लाह तआला का बहुत शुक्रगुज़ार हूँ कि एक साल पहले मैं ईमान से ख़ाली था और इस साल अल्लाह तआला ने मुझे ईमान की दौलत नसीब फ़रमाई है। मेरी पैदाइश और परवरिश पूर्ण रूप से लामज़हब माहौल में हुई लेकिन अल्लाह तआला ने जलसा सालाना में शामिल होने और आपसे मुलाक़ात के माध्यम मुझे ईमान से लाभान्वित किया।

डाक्टर मुहम्मद महमूद साहिब कहते हैं जब दो साल पहले पहली बार जलसा पर आया तो मुझे अजीब सा लगा और मेरे लिए बिलकुल नई बात थी कि अहमदी कहते हैं कि महदी और मसीह आ गया और हमें उस का अभी ज्ञान नहीं है। मेरे ज़हन में कई सवाल चक्कर काटते ते कि हमने तो यही सीखा और पढ़ा है कि महदी अरबी होगा और इस का नाम मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह होगा। क्या यह जमाअत धार्मिक है या सयासी। इसी तरह के कई सवालों ने मेरे ज़हन को जकड़ लिया। इन सवालों के जवाब हासिल करने के लिए मैं अगले साल फिर जलसा पर आया और अहमदी भाईयों से विभिन्न विषयों पर बातचीत होती रही। जलसा के बाद भी मेरा अहमदियों से समपर्क रहा और धीरे-धीरे मेरे समस्त सवालों के जवाब मिलते रहे और मुझे यक़ीन हो गया कि अहमदी ही एक हक़ीक़ी मुसलमान के समस्त गुण अपने अंदर रखते हैं। अत: मैंने जमाअत की मुहब्बत और प्रेम से प्रभावित हो कर बैअत करने का इरादा कर लिया है। कहते हैं यह मुहब्बत जो जमाअत के लोगों में पाई जाती है अगर अल्लाह तआला उस का बीज उनके दिलों में ना बोता तो कभी भी यह मुहब्बत पैदा ना होती। फिर कहते हैं कि अल्लाह तआला का फ़ज़ल है कि मुझे ख़लीफ़ा वक़्त के हाथ पर बैअत करने की सआदत नसीब हुई और बैअत के शब्द दोहराते हुए जो एहसास था इस को वर्णन करना बहुत मुश्किल है। ख़ुश-क़िस्मत हूँ कि ख़लीफ़ा वक़्त के हाथ पर बैअत करने की तौफ़ीक़ मिली। फिर कहते हैं कि अगर बैअत पाँच घंटे भी जारी रहती तो मैं बोर ना होता और ना मुझे वक़्त गुज़रने का होता।

कोसोवो के वफ़द में एक दोस्त थे जो पहली बार शामिल हुए और पाँच लोगों की सारी फ़ैमली को बैअत करने की सआदत हासिल हुई। कहते हैं कि पहले मुझे बैअत का एक डर था कि किस तरह होगी और जिस्म घबराहट से काँप रहा था लेकिन बैअत करने के बाद फिर यह शान्त हो गया और महसूस होने लगा जैसे कि सब नॉर्मल हो गया है

कमाल अलवान साहिब लेबनानी हैं । कहते हैं मेरे पास एक रैस्टोरैंट था जिस में एक अहमदी दोस्त मुहम्मद शहादह आया करते थे। एक दिन मुझे कहने लगे कि मैं आपको एक बात बताना चाहता हूँ कि इमाम महदी आ भी चुके हैं और वफ़ात भी पा चुके हैं। उनके जाने के बाद मैंने सोचा कि यह शख़्स कौन था। फिर कुछ अर्से के बाद वह अहमदी आता है और दोबारा आ के कहता है कि इमाम महदी आ चुका है। एक दिन उसने कुछ बातों की वज़ाहत की जिनमें दज्जाल और वफ़ात मसीह का ज़िक्र था। मेरे लिए हैरत-अंगेज़ बातें थीं और मेरे दिल में घर कर गईं और मेरे दिल में तहरीक पैदा करने लगीं कि मैं जमाअत के बारे में और अधिक मालूमात हासिल करूँ। फिर उसने मुझे जलसा पर आने की दावत दी जिसे मैंने ख़ुशी से स्वीकार कर लिया। कहते हैं जलसा में जो मेरे लिए जमाअत की सच्चाई की सबसे पहली दलील बनी वह इतनी बड़ी संख्या और उनका उत्तम इंतिज़ाम था। जलसा के दौरान एक दोस्त ने मुझे बताया कि यह ख़लीफ़तुल मुस्लिमीन हैं। फिर मैंने अहमदियों से विभिन्न सवाल किए जिनका उन्होंने बड़े प्यार से जवाब दिया। मेरा दिल अहमदियत की सदाक़त से सन्तुष्ट होता चला गया। मैंने सोचा कि अगले साल तक ज़िन्दा रहूँगा भी या नहीं इसलिए अभी बैअत करनी चाहिए तो मैंने बैअत कर ली। इसी तरह मेरी दो ख़्वाबें भी जमाअत की सदाक़त की वजह बनें। अल्लाह के फ़ज़ल से मेरे एक बेटे ने भी बैअत कर ली और मैं चाहता हूँ कि मेरी बाक़ी औलाद भी अहमदी हो जाए। मैं आज अलहवारुल मुबाशिर और ख़ुत्बात जुम्अ: ग़ौर से देखता हूँ। मेरे नज़दीक दस बैअत की शर्तें हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तरफ़ से सिर्फ कुछ शर्तें ही नहीं बल्कि ये ख़ुदाई लाहे अमल है। बैअत से पहले मैं दुआ किया करता था कि ख़ुदा तआला मुझे इमाम महदी को देखने की तौफ़ीक़ दे। पिछले ज़िन्दगी जो जमाअत के बिना मैंने गुज़ारी इस पर मुझे अफसोस होता रहता है। मैं इसलिए हर अहमदी का दिल की गहराई से सम्मान करता हूँ क्योंकि ये लोग दीन मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़िदमत कर रहे हैं। मुझे अब अपने बीवी बच्चों और काम करने की इतनी फ़िक्र नहीं होती बल्कि मुझे फ़िक्र यह रहती है कि मेरे पास इतने पैसे हूँ कि मैं जमाअत की तरक़्क़ी के लिए ख़र्च कर सकों और जमाअत की ख़िदमत कर सकों और अल्लाह तआला मेरी ख़ाहिश को पूरा करे।

फिर फ़वाद साहिब हैं जो कहते हैं कि जमाअत के परिचय से पहले अल्लाह तआला की अज़मत के बारे में सोचता था और मुसलमानों की हालत पर नज़र करता था जो दिन प्रतिदिन बुरी होती चली जा रही थी और यह कि उनकी हालत कब ठीक होगी। फिर जब मैं जर्मनी आ गया तो मैं यूरोप के अरब दोस्तों को देखकर सोचा करता था कि क्या उन लोगों के माध्यम से यूरोप में इस्लाम फैलेगा जैसा कि हदीस में आता है कि आख़िरी ज़माने में यूरोप में इस्लाम फैलेगा। इसी दौरान एक अहमदी दोस्त माहिर अलमानी से मेरी मुलाक़ात हुई और उसने जमाअत के बारे में बताना शुरू किया। शुरू में तो मैंने उस की मुख़ालिफ़त की लेकिन जमाअत की किताबों का अध्ययन करने के बाद मैंने जलसा पर जाने का इरादा कर लिया। मैंने जलसा देखा और सोचा कि इतने लोग किस तरह एक शख़्स के हाथ पर इकट्ठे हो गए

और आपस में मुहब्बत और उलफ़त का सम्बन्ध भी क़ायम हो गया। मैंने तहज्जुद में बहुत दुआ की कि हे अल्लाह !अगर यह जमाअत सच्ची है तो मुझे इसी जलसा में (यह 2018 ई की बात है बैअत करने की तौफ़ीक़ अता फ़र्मा दे। अत: इस जलसा पर मेरा दिल मुतमइन हो गया और मैंने बैअत कर ली लेकिन मेरी बीवी ने बैअत करने से इनकार कर दिया और मैंने समझाया कि तुम ये किताबें पढ़ो और ख़ुदा से इस्तिख़ारा करो। तीन महीने बाद मेरी बीवी ने इस्तिख़ारा किया और उसने ख़्वाब में देखा कि लोग जमा हैं और एक सफ़ेद कबूतर उन के बीच मौजूद है। मेरी बीवी ने पूछा कि यह कबूतर क्या है तो उनमें से एक शख़्स ने कहा यह कबूतर इस्लाम फैलाने के लिए कुदस के इलाक़े में आया है। इस ख़्वाब ने मेरी बीवी के दिल को खोल दिया और वह इस जलसा में अर्थात 2019 ई में शामिल हुई और बैअत कर ली। फिर कहते हैं में इस बात पर बहुत ख़ुश हूँ कि अल्लाह तआला ने मेरी समस्त फ़ैमली को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत करने की तौफ़ीक़ दी है और अब में अपने समस्त रिश्तेदारों को भी तब्लीग़ करूँगा

ऑस्ट्रिया से सम्बन्ध रखने वाली एक मेहमान फ़ातिमा सामर साहिबा कहती हैं कि मैंने जलसा जर्मनी के अवसर पर 7 जुलाई को बैअत की है और मैं दुआ का निवेदन करती हूँ कि मेरी बैअत बरकत वाली हो और मेरी कोई ग़लती मेरे इस अहद बैअत को तोड़ ना दे। अल्लाह करे कि मैं अपने अंदर वो तब्दीलियां पैदा कर सकूं जिनका हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लामी उसूल की फ़िलासफ़ी में ज़िक्र किया है। फिर कहती हैं में अपनी फ़ैमिली के साथ 2011 ई से अहमदी हूँ। लेकिन बैअत फ़ार्म भरा नहीं था और अपने आपको अहमदी समझती थीं। कहती हैं दो महीने बाद मेरी उम्र अठारह साल हो जाएगी। मेरी बचपन से यह ख़ाहिश थी कि ख़ुद बैअत करूँ । मैंने 2011 ई से अपना बैअत फ़ार्म महफ़ूज़ किया हुआ था ताकि ख़ुद पेश करूँ और आपके हाथ पर ख़ुद बैअत करूँ। अत: इस साल यह ख़ाहिश पूरी हो गई और अब वह फ़ार्म भरने करने से पहले ही मेहमानों को तब्लीग़ भी करती हैं। तो अल्लाह तआला नौजवानों के दिल भी खोल रहा है

एक कुर्द लड़की अपने विचार वर्णन करती हैं कि मेरी माता ने अहमदियत स्वीकार की थी लेकिन इस वक़्त में तैयार ना थी। अब पिछले कुछ महीने से मुझे सन्तोष हो रहा है क्योंकि मैंने अहमदियों में आपसी मुहब्बत देखी है और आज आपका ख़िताब सुनने से मेरी समस्त शंकाए दूर हो गई हैं। पिछले साल भी मैं आई थी लेकिन यह कैफ़ीयत ना थी जो आज है। मेरी माता बहुत ख़ुश होंगी क्योंकि अब मुझे बहुत शिद्दत से एहसास होने लगा है कि अब मुझे अहमदी हो चाहिए।

जॉर्जिया से एक वकील जो यूनीवर्सिटी में लेक्चरर हैं। वह भी आए। ग़ैर (अहमदी) हैं। कहते हैं उन्होंने बैअत की जो कार्रवाई देखी। कहते हैं: मैं बहुत प्रभावित हुआ और यह एक चमत्कार है। बार-बार कहते थे यह एक चमत्कार है। और एक चमत्कार है। कहते हैं कि जमाअत में आपसी मुहब्बत ज़्यादा है। मैंने मुशाहिदा किया है कि आप लोगों के चेहरों पर हमेशा मुस्कुराहट है।

अल्लाह तआला इन बैअत करने वालों के इख़लास वफ़ा और ईमान तथा ईक़ान में तरक़्क़ी अता फ़रमाता रहे और हम में से हर एक को भी जलसा की बरकतों से फ़ैज़ पाने वाला बनाए और मसीह मौऊद की दुआओं का वारिस बनाए।

मीडिया के माध्यम से इस साल जर्मनी में कुल तेरह मीडिया आउट लुट्स (Outlets) ने और इस के अतिरिक्त फिर सोशल मीडिया के माध्यम साईटस पर भी जलसा की कवरेज दी। इटली, चीन और सलवाकिया के ऑनलाइन अख़बारों ने ख़बरें दीं। उनके अंदाज़े के अनुसार दो करोड़ छब्बीस लाख लोगों तक पैग़ाम पहुंचा। रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ के माध्यम से भी विभिन्न प्रोग्राम आते रहे। ये एक हफ़्ते तक जारी रहेगा और उनका ख़्याल है कि इस के माध्यम भी एक मिलियन लोगों तक पहुंच जाएगा। यह जो रिव्यू आफ़ रेलीजिंज़ का मैंने भी ज़िक्र किया यह अभी चल रहा है। अफ़्रीक़ा में ऐम टी ए अफ़्रीक़ा के माध्यम से उन्हें परिचय हासिल हुआ है। वहां भी जलसों के प्रोग्राम दिखाए गए और जलसा जर्मनी के हवाले से जो रिपोर्टस बना कर भेजी गई थीं वह वहां घाना के नैशनल टीवी ने दिखाएंगे। गेम्बया के नैशनल टैलीविज़न दिखाएंगे। रवांडा के नैशनल टैलीविज़न दिखाएंगे। सिरालियोन के नैशनल टैलीविज़न दिखाएंगे और योगंडा के नैशनल टैलीविज़न दिखाएंगे।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से दुनिया में इस जलसा के हवाले से बड़े वसीअ पैमाने पर जमाअत का परिचय भी हुआ है। अल्लाह तआला हर लिहाज़ से येह बरकतों वाला बनाए

(अल्फज़ल इंटरनेशनल 2 अगस्त 2019 ई पृष्ठ 5-11)

☆ ☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष

कहता है कि सच्चाई का प्रचार करो। असल दावत हक़ तो आपका अपना नमूना है। अगर आपका नमूना अच्छा है तो फिर सारे काम आसान हो जाते हैं। बाल्टीमोर में हालात का मुक़ाबला करने के लिए अहमदिया मुस्लिम जमाअत मैदान में आई है और समाज में एक सकारात्मक भूमिका अदा करने के लिए उसने अपने इरादा को प्रकट किया है। यह बहुत ही अनुकरण योग्य नमूना है। लेकिन आपके अच्छे काम यहां पर मीडिया में इतने पेश नहीं किए जाते और उन कामों को सराहा नहीं जाता। मैं हर हाल में आप लोगों के साथ हूँ।

* डिस्ट्रिक्ट 48 से स्टेट प्रतिनिधि भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। उन्होंने अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहा: मैं कहना चाहती हूँ कि मैं इस ख़िताब से बहुत प्रभावित हुई हूँ। ख़ासकर ऐसे हालात में जब मुसलमानों के बारे में समाज में ख़ौफ़ पाया जाता है और इस देश में नस्ली बुनियादों पर अन्तर है, इन हालात में मुझे बहुत ख़ुशी है कि हुज़ूर अनवर ने हमें अपनी ज़िम्मेदारियों की तरफ़ ध्यान दिलाया है। आपने हमें बताया है कि प्रत्येक से मुहब्बत करो और किसी से नफ़रत ना करो। यही वे बातें हैं जो हमें चाहिऐं, मुहब्बत, अमन, इन्साफ़, बाल्टीमोर को यह उच्च इक़दार प्राप्त करने की ज़रूरत है। मैं आपका शुक्रिया अदा करती हूँ कि आप यहां तशरीफ़ लाए हैं और इस अहम पैग़ाम की तरफ़ हमारी ध्यान करवाया है।

*उनके पती ने अपने विचार का प्रकट करते हुए कहा: जैसा कि मेरी पत्नी ने कहा है, यह हमारे लिए बहुत ही अहम पैग़ाम है। हुज़ूर अनवर की मौजूदगी हमारे लिए बहुत सम्मान की बात है। हम ख़ुद कोशिश करके जितनी भी समाज की बेहतरी की बातें कर लें, उनका इतना असर नहीं हो सकता जितना हुज़ूर अनवर की मौजूदगी से हुआ है। अहमदिया मुस्लिम कम्यूनिटी सिर्फ़ यहां ही नहीं बल्कि सारी यू एस ए में एक शानदार भूमिका अदा कर रही है। हम दोनों ईसाई हैं और हमारे बहुत से मुसलमान दोस्त हैं और उनसे बहुत अच्छा गहरा सम्बन्ध है। आप सबकी कोशिशों का बहुत शुक्रिया।

*एक उम्र वाली औरत ने अपने भावनाओं का प्रकट करते हुए कहा: मैंने हुज़ूर अनवर से बहुत कुछ सीखा है। यह पैग़ाम यू एस ए के लिए बहुत अहम पैग़ाम था। मेरी इच्छा है कि यू एस ए में और अधिक भी ऐसी बड़ी शख़्सियात हों जो अमन की स्थापना के लिए अपना भूमिका अदा करें, जैसा कि हुज़ूर अनवर कोशिश कर रहे हैं। आपका बहुत शुक्रिया।

*एक मेहमान अमीरा क़ाज़ी साहिबा ने अपने भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: एक फ़ैमिली फ्रैंड ने हमें यहां आने की दावत दी थी और मैं इसी तलाश में यहां आई थी कि जा कर अहमदियों का प्रोग्राम देखूं। मैं हुज़ूर अनवर की व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुई हूँ, हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत अहम था। हुज़ूर अनवर ने जो हमें यक़ीन दिलाया है कि यह मस्जिद अपने उद्देश्यों पूरे करने वाली होगी, मैं देखना चाहती हूँ कि यहां की कम्यूनिटी अब कैसे इन उद्देश्यों को पूरा करती है। मैं यहां नमाज़ें पढ़ने आऊँगी। मेरे ख़्याल में आपने निहायत ही उचित वक़्त पर बड़े अच्छे अंदाज़ में हमें समझाया है। हमें सारे मतभेद भुला कर, साझी बातों पर इकट्ठे हो कर समाज की सेवा करनी है। मेरी इच्छा थी कि हमें कोई ऐसा प्लेटफार्म मिले और यह प्लेटफार्म हुज़ूर अनवर ने हमें उपलब्ध कर दिया है। मैं समझती हूँ कि अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने बहुत शानदार काम किया है और मैं इस काम को और अधिक बढ़ता और फैलता देखना चाहती हूँ।

* न्यू जर्सी से एक मैडीकल स्टूडैंट लैला क़ाज़ी साहिबा भी इस प्रोग्राम में शरीक थीं। यह कहती हैं: हुज़ूर अनवर ने जो सब लोगों को साथ मिला कर काम करने का इरशाद फ़रमाया है, यह बहुत ही अहम पैग़ाम है। आपने फ़रमाया है कि मस्जिद लोगों के इकट्ठे होने की जगह है, ना सिर्फ इबादत करने के लिए बल्कि मिलकर समाज की सेवा करने के लिए। मैं इस पैग़ाम से बहुत प्रभावित हुई हूँ। ख़ासकर 9/11 की घटना के बाद मुसलमानों को यहां अजीब नज़र से देखा जाता है, इसी तरह इस्लामी मस्जिद को भी शक की निगाह से देखा जाता है। मेरे ख़्याल में यह बहुत अच्छा प्रोग्राम था जिस में ग़ैर मुस्लिम भी बुलाअ गए थे, ताकि वे ख़ुद आकर मस्जिद के उद्देश्यों के बारे में खुल कर सवाल कर सकें और अपनी तसल्ली कर सकें। हुज़ूर अनवर ने यह भी फ़रमाया है कि उनकी जमाअत समाज की बेहतरी के लिए बहुत से समाज सेवा काम कर रही है, मेरे ख़्याल में ग़ैर मुस्लिम यहां से इस्लाम के बारे में बहुत सकारात्मक तस्वीर लेकर जाऐंगे।

*मशअल साहिबा जो कि एक परीसबीटीरीन चर्च में मिनिस्टर हैं, अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहती हैं: मैं हुज़ूर अनवर के अमन के पैग़ाम से बहुत प्रभावित हुई हूँ। हुज़ूर अनवर ने आपसी एकता, बराबरी पर ज़ोर दिया है और ख़ौफ़ ख़त्म

करके मुहब्बत स्थापित करने की तरफ़ ध्यान दिलाया है। यह पैग़ाम बहुत महत्वपूर्ण है। मस्जिद की स्थापना के बारे में से आपने जो उद्देश्य बयान फ़रमाए हैं, यह बहुत शानदार हैं। फिर हुज़ूर ने पड़ोसियों से हुस्न सुलूक की शिक्षा का भी ज़िक्र किया है। मेरे लिए यह नई चीज़ें हैं। मैं बहुत प्रभावित हुई हूँ। मुझे आज मालूम हुआ है कि ईसाईयत में जो प्यार मुहब्बत की शिक्षा दी गई है, ये तो वही बातें हैं। जबकि मीडिया एक अलग ही चीज़ पेश करता है। मुझे बहुत ख़ुशी है कि हुज़ूर अनवर ने हमें ये बातें बताई हैं।

*एक हिस्टोरियन डाक्टर फ़ातिमा साहिबा भी इस प्रोग्राम में बुलाई गई थीं। यह अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहती हैं: मेरी सपीशलाइज़ीशन यू एस ए में इस्लाम है और इस बारे मैं ने यू एस ए में इस्लाम के इतिहास पर काफ़ी काम किया हुआ है। मैं कोई धार्मिक स्कॉलर नहीं हूँ, बल्कि सिर्फ़ इतिहासकार हूँ। इस बारे में हुज़ूर अनवर ने जो यह फ़रमाया है कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब ने इस दौर में इस्लाम का पुनर्जागरण किया है, मेरा ज़हन उसी तरफ़ लगा हुआ है और मैं अब इस बारे में और अधिक तहक़ीक़ को बढ़ाऊँगी। मुझे यह जान कर बहुत ख़ुशी हुई है। अब मेरी तहक़ीक़ का केन्द्र ना सिर्फ मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद कादियानी (अलैहि अलैहिस्सलाम) हैं बल्कि आपकी तहरीरात और उपदेशों भी हैं, जिनके द्वारा से आपने यह पुनर्जागरण फ़रमाया है। हुज़ूर अनवर का अमन का पैग़ाम एक हैरत-अंगेज़ पैग़ाम है। आपने इस्लामी हुस्न सुलूक को सिर्फ धर्मों तक सीमित नहीं रखा बल्कि ग़ैर मज़हबी लोगों से भी हुस्न सुलूक का उपदेश फ़रमाया है। आपका नज़रिया है कि रंग तथा नस्ल के भेद के अन्तर के बिना हम सब एक हो कर मानव जाति की भलाई के लिए काम करें। क्या ही शानदार पैग़ाम है। बतौर मुसलमान हमें शक की निगाह से देखा जाता है, इसलिए एक महान मुसलमान की तरफ से इस्लामी शिक्षा बयान किया जाना एक उत्तम क़दम है। मुझे ख़ुशी है कि मैं इस प्रोग्राम में आई हूँ। दावत देने का बहुत शुक्रिया।

*एक औरत ने कहा :मैं हर इतवार को चर्च में दुनिया के अमन के लिए दुआ करती हूँ। हुज़ूर अनवर ने कहा है कि हमें एक दूसरे के क़रीब आना है, हमें एक दूसरे को समझना है ना कि एक दूसरे के मज़हब तथा अक़ीदा, क़ौमीयतों से ख़ौफ़ खाना है। हमें ऐसा ही होने की ज़रूरत है। मैं इसीलिए यहां आई हूँ। मेरी इच्छा है कि मैं हुज़ूर अनवर से मिल सकूं लेकिन यहां बहुत से लोग हैं, शायद यह मेरे लिए मुम्किन ना हो।

*एक छात्रा ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर के ख़िताब ने हम में एक जान डाल दी है। मुझे यहां आकर गर्व का एहसास हो रहा है। हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया कि हम सब इन्सान हैं और हुज़ूर यह बताना चाहते हैं कि जब हम सब एक जैसे इन्सान हैं तो फिर हम में किसी किस्म की नफ़रत की कोई जगह बाक़ी नहीं रहती। फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि हमें आज अपनी आने वाली नस्लों के लिए काम करना है। मेरे लिए यह बातें बहुत ही ईमान को मजबूत करने का कारण बनी हैं। बहुत ही प्रभावित करने वाला ख़िताब था।

*कैप्टन जोज़फ़ Conger अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहते हैं :मेरा पिछले कुछ समय से जमाअत से सम्पर्क है और यह बहुत ही सहयोग करने वाली जमाअत है। यह प्रोग्राम बहुत कामयाब रहा। हुज़ूर अनवर का ख़िताब बहुत प्रभावित करने वाला था। अमन वाले समाज के लिए हमें उच्च नेतृत्व की ज़रूरत है। जैसा कि हुज़ूर अनवर का वजूद है।

*सेक्रेटरी आफ़ स्टेट John Robin Smith ने प्रोग्राम के बाद अपने विचार को प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर से मिलकर बहुत अच्छा लगा। डिनर पर हुज़ूर अनवर के क़रीब बैठना एक बहुत ही सम्मान की बात थी। और दूसरी तरफ़ हुज़ूर अनवर के भाई तशरीफ़ रखते थे। मेरी दोनों से बहुत अच्छी गुफ़्तगु हुई मैं समझता हूँ कि अमन की स्थापना और अन्य धर्मों का सम्मान करना एक शानदार पैग़ाम था। मैंने पिछले चार साल से देखा है कि अन्य धर्मों से सम्पर्क करने का काफ़ी फ़ायदा हुआ है। हुज़ूर अनवर ने जो नसीहतें की हैं, मैं समझता हूँ कि यह सारी बातें अमन के स्थापना में और समाज की बेहतरी में बुनियादी भूमिका अदा करेंगी। कई बार हमारे समाज पर मुश्किल वक़्त भी आता है लेकिन अच्छे काम भी हो रहे हैं, जैसा कि आज का प्रोग्राम था। मेरा ख़्याल है कि ऐसे प्रोग्राम समाज में अमन स्थापित करने के लिए आवश्यक हैं। हुज़ूर अनवर के पैग़ाम ने समाज में अमन की स्थापना के हर पहलू का वर्णन किया है।

*प्रोग्राम में एक पादरी फ़ादर Joe भी शामिल थे। यह अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहते हैं: आपके ख़लीफ़ा का व्यक्तित्व से बहुत प्रभावित हुआ हूँ। उनके आने से फ़िज़ा पर एक अजीब असर छा गया था। उनका पैग़ाम भी मुहब्बत और इख़लास से भरा था। आज अज़ान भी सुनी जिसने दिल पर एक गहरा असर छोड़ा है।

हुज़ूर अनवर का पैग़ाम बहुत अहम है। यह बहुत ही बरवक़्त प्रोग्राम था। हुज़ूर अनवर के ख़िताब के दौरान में एक एक बात से सहमति कर रहा था क्योंकि मैं बाल्टीमोर में कई बार अहमदिया मस्जिद गया हुआ हूँ, और मैं यक़ीन से कह सकता हूँ कि जो हुज़ूर अनवर ने फ़रमाया है पिछले कुछ सालों से दूसरी मस्जिद में होता देख रहा हूँ। अहमदिया मस्जिद सारी कम्यूनिटी के लिए खुली है, मैं कई बार जुमा पर भी गया हूँ। जैसा कि ख़लीफ़ा ने कहा है, मैं इन सारी बातों के व्यवहारात्मक रूप का गवाह हूँ। मुझे यह सारी बातें सुन कर बहुत ख़ुशी हुई है। यहां जो विभिन्न धर्मों से सम्बन्ध रखने वाले इकट्ठे हुए हैं और अमन की बात कर रहे हैं, यही वह बात है, जिसकी ना सिर्फ हमारे इस शहर को बल्कि सारी दुनिया को ज़रूरत है। मैं ख़लीफ़ा से और अहमदिया जमाअत से बहुत प्रभावित हुआ हूँ और इच्छा रखता हूँ कि और बहुत से ऐसे अवसर हों जहां अहमदिया जमाअत अपने व्यवहारात्मक नमूना से समाज को अमन वाला बनाने के लिए अपनी भूमिका अदा करती रहे।

*एक औरत मेहमान ने अपने भावनाओं का प्रकट करते हुए कहा: अव्वल तो यह एक शानदार शाम थी। हुज़ूर अनवर का वजूद तो घायल कर देने वाला है। आपका हर वाक्य ऐसा था कि मैं इस से आनन्दित हो रही थी। मैं कई बार अपने क्षेत्र में मस्जिद गई हूँ। हुज़ूर अनवर की बातें सुनकर एहसास होता था कि आप दिल से बातें कर रहे हैं। आप मस्जिद को अमन, मुहब्बत और भाईचारा की जगह क़रार दे रहे थे और मैं इस की गवाह हूँ। मैं यहां आकर बहुत ख़ुशी महसूस कर रही हूँ। मैं अन्य विश्वव्यापी रहनुमाओं से भी मिल चुकी हूँ लेकिन हुज़ूर अनवर की ज़ात में एक जाज़बीयत है। आपकी बातें दिल से निकलती महसूस होती हैं, सबसे बड़ी बात यह है कि उन में छुपा हुआ कोई सयासी ऐजंडा नहीं था जो कि मुझे बहुत अच्छा लगा। आप जो कुछ कह रहे थे वह आपकी दिली तमन्ना थी और महसूस हो रहा था कि यह शख़्स जो कुछ कह रहा है वह उसके दिल की आवाज़ है। हुज़ूर अनवर निहायत शफ़ीक़ हैं, आप बहुत नरम तबीयत वाले हैं और वास्तविक तौर पर दुनिया में अमन चाहते हैं और इस में छुपा हुआ कोई एजंडा या कोई छुपा हुआ मक़सद नहीं है।

* बाल्टीमोर की मेयर Catherine Pugh ने अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहा: हुज़ूर अनवर से मिलकर बहुत ख़ुशी हुई। पहली चीज़ जो मैंने आपकी व्यक्तित्व में महसूस की वङ यह थी कि आपकी मौजूदगी में एक रूह-परवर माहौल पैदा हो जाता है। आपने अमन के बारे में बात की है। यह वह पैग़ाम है, जो आज वक़्त की ज़रूरत है। ना सिर्फ हमारे शहर में बल्कि हमारी स्टेट और फिर सारे यू एस ए और सारी दुनिया में इस पैग़ाम की बहुत ज़रूरत है। मैं समझती हूँ कि यह पैग़ाम प्रत्येक को सुनना चाहिए। अगर हम सुनेंगे तो हमें मालूम होगा कि दुनिया की समस्याओं का अकेला हल अमन ही है और हम एक दूसरे से मुहब्बत करना सीखेंगे। मुझे आज यहां आकर और हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात करके बहुत ख़ुशी हुई है। हुज़ूर अनवर ने जो सबको साथ लेकर चलने का पैग़ाम दिया है यह अहम है। हम महरूमों का ख़्याल रखने के लिए जो भी क़दम उठाएँगे उस का असर हम सब पर पड़ेगा। आपसी मुहब्बत और भाईचारा का पैग़ाम हम सब के लिए बहुत अहम है। हमारे समाज में हथियार बहुत आम हो गया है, हमें एक दूसरे की तर्बीयत करनी है, एक

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,

JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2017-2019 Vol. 4 Thursday 15-22 August 2019 Issue No. 33-34

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Tel. : +91- 1872-224757
Mobile : +91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

दूसरे को समझाना है कि ज़िन्दगी क़ीमती है, हमें इसकी क़दर करनी चाहिए और एक दूसरे के हुक़ूक़ का ख़्याल रखना चाहिए ताकि समाज में अमन स्थापित कर सकें।

*एक न्योरोलोजिस्ट Robert Dewberry भी प्रोग्राम में शामिल हुए। यह कहते हैं: मैं यहां आकर बहुत महज़ूज़ हुआ हूँ। आपके रुहानी इमाम की तक़रीर बहुत हौसला बढ़ाने वाली और दिलों को गरमाने वाली थी। ख़लीफ़ा ने विश्वव्यापी पैग़ाम दिया है। ख़लीफ़ा के व्यक्तित्व को अगर एक शब्द में बयान किया जाए तो उन्हें साक्षात अमन कहा जा सकता है।

*बाल्टीमोर काओनटी पुलिस डिपार्टमैंट से Chris Keyl अपने विचारों का प्रकट करते हुए कहते हैं: आज का प्रोग्राम बहुत शानदार था। मैं 2015 ई से इस जमाअत को देख रहा हूँ और यह निरन्तर मुहब्बत, प्यार और अमन का प्रचार कर रहे हैं। आज पहली बार मैंने आपके इमाम से भी यही बातें सुनी हैं और मुझे अंदाज़ा हुआ है कि असल पैग़ाम का स्रोत क्या है। आपके इमाम के महान व्यक्तित्व से यह अच्छाईयां निकलती हैं और फिर हर जगह निचली सतह पर एक एक अहमदी में प्रवेश करती हैं और फिर प्रत्येक उन पर अनुकरण करके दिखाता है। आपकी यहां आमद बहुत ही लाभदायक है। पिछले कुछ सालों से यहां के हालात कुछ ख़राब रहे हैं और अमन स्थापित करने वाली संस्थाओं को कुछ कम्यूनिटीज़ से चैलेंजिज़ का सामना रहा है। ख़ुशी है कि इतनी बड़ा व्यक्तित्व यहां आए हैं और सबको अमन का पैग़ाम दिया है और साथ लेकर चलने की बात की है। हुज़ूर अनवर की ज़ात की नुमायां विशेषता हुज़ूर की विनम्रता और विनय है।

*एक मेहमान ने अपने विचार को प्रकट करते हुए कहा: मुझे इस प्रोग्राम से पहले भी हुज़ूर अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने हुज़ूर की ज़ात में विनम्रता देखी है। जैसे ही हुज़ूर अनवर तशरीफ़ लाए, मुझे आपका व्यक्तित्व रौअब वाला और वक़ार वाला महसूस हुआ। आप प्रत्येक की बात सुनने वाले हैं। आपसे मिलकर महसूस होता है कि आप मानव जाति का वास्तविक दर्द रखते हैं।

*एक औरत ने अपनी भावनाओं को प्रकट करते हुए कहा: मैं हुज़ूर अनवर के क़रीब ना थी और स्क्रीन पर हुज़ूर अनवर को पहली बार देखा। आपको देखते ही ऐसे महसूस हुआ जैसा कि आपकी ज़ात से ख़ुदा तआला का नूर निकल रहा है। मैंने बहुत से लोगों को यह समीक्षा करते देखा है और मैं ख़ुद उस की गवाह हूँ। आपकी मौजूदगी में ख़ुदाई नूर नाज़िल होता महसूस कर रहे होते हैं।

*Mr. Chuck Hart (सार्जैंट बाल्टीमोर काओनटी)ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: जमाअत अहमदिया के ख़लीफ़ा का ख़िताब निहायत ही तर्कपूर्ण और ताक़तवर ख़िताब था जिस में उन्होंने भाईचारा और समाज में अमन की स्थापना और मुसलमानों की मस्जिद की असल उद्देशय पर रोशनी डाली। ख़लीफ़ा ने इन आरोपों और ग़लत-फ़हमियों के भी उत्तर दिए जो आजकल के समाज में मुसलमानों के बारे में फैलाए जाते हैं। ख़लीफ़ा के ख़िताब से मैं इस नतीजा पर पहुंचा हूँ कि वास्तव में ज्ञान ही वास्तविक ताक़त है जिस से अज्ञानता दूर होती है।

* Ms. Marie Marucci ने अपने विचारों को प्रकट करते हुए कहा: मैं आपकी जमाअत के शिक्षा विभाग के लिए सम्मानी शील्डज़ तय्यार करती हूँ। लिहाज़ा मेरा जमाअत के साथ पहले से एक परिचय है। हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह को MTA के माध्यम से तो देखा हुआ था लेकिन आज पहली बार ख़लीफ़तुल मसीह को अपनी आंखों से देखकर बहुत ख़ुशी महसूस कर रही हूँ। हुज़ूर ने जो पैग़ाम अपने ख़िताब के द्वारा हम तक पहुंचाया है वह निहायत ही ख़ूबसूरत और इस नाज़ुक वक़्त के ठीक अनुसार है।

* Mr. Russ Edwards (Government I.T. Contractor) ने बयान किया: आज मैं ने पहली बार जमाअत अहमदिया के फंक्शन में शिरकत की है। आपके ख़लीफ़ा का पैग़ाम बहुत पसंद आया जिसमें उन्होंने ग़ैर मुस्लिम लोगों को तसल्ली दिलाई है कि जमाअत अहमदिया की यह मस्जिद इस शहर में अमन का एक गहवारा साबित होगी।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 1 का शेष

सच्चा मुसलमान कहलाने का अधिकारी है। मुझे याद आया कि एक मुसलमान ने किसी यहूदी को दावत इस्लाम की कि तू मुसलमान हो जा। मुसलमान ख़ुद दुराचार में मुब्तला था। यहूदी ने इस फ़ासिक़ मुसलमान को कहा कि तू पहले अपने आपको देख और तो इस बात पर गर्व न कर कि तू मुसलमान कहलाता है। ख़ुदा तआला इस्लाम का अर्थ चाहता है ना नाम और शब्द। यहूदी ने अपना क़िस्सा बयान किया कि मैंने अपने लड़के का नाम ख़ालिद रखा था मगर दूसरे दिन मुझे इसे क़ब्र में गाड़ना पड़ा। अगर सिर्फ नाम ही में बरकत होती तो वह क्यों मरता? अगर कोई मुसलमान से पूछता है कि तू क्या मुसलमान है? तो वह जवाब देता है। अल्हमदु लिल्लाह

अत: याद रखो कि केवल शाब्दिक और ज़बानी काम नहीं आ सकती जब तक कि कर्म ना हो। और बातें अल्लाह तआला के निकट कुछ भी सम्मान के योग्य नहीं। अत: ख़ुदा तआला ने फ़रमाया है

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (अस्सफ 4)

इस्लाम की ख़िदमत का सौभाग्य प्राप्त करने का तरीक़ा

अब मैं फिर अपने पहले मक़सद की तरफ़ वापस आता हूँ अर्थात صَابِرُوْا وَ رَابِطُوْا (आले इम्रान: 201) जिस तरह दुश्मन के मुक़ाबला पर सरहद पर घोड़ा होना ज़रूरी है ताकि वह हद से ना निकलने पाए। इसी तरह तुम भी तैयार रहो। ऐसा ना हो कि दुश्मन सरहद से गुज़र कर इस्लाम को सदमा पहुंचाए। मैं पहले भी ब्यान कर चुका हूँ कि अगर तुम इस्लाम का समर्थन और ख़िदमत करना चाहते हो तो पहले ख़ुद तक़्वा और पवित्रता धारण करो जिस से ख़ुद तुम ख़ुदा तआला की पनाह के मज़बूत क़िला में आ सको। और फिर तुमको इस ख़िदमत का सौभाग्य और योग्यता प्राप्त हो। तुम देखते हो कि मुसलमानों की बाहरी ताक़त कैसी कमज़ोर हो गई है। कौमें उनको नफ़रत और हीनता की नज़र से देखती हैं। अगर तुम्हारी अंदरूनी और हार्दिक ताक़त भी कमज़ोर और पस्त हो गई तो बस फिर तो ख़ात्मा ही समझो। तुम अपने नफ़सों को ऐसे पाक करो कि क़ुदसी क़ुव्वत उनमें आ जाए और वे सरहद के घोड़ों की तरह मज़बूत और मुहाफ़िज़ हो जाएं। अल्लाह तआला का फ़ज़ल हमेशा मुत्तक़ियों और सच्चों ही के साथ शामिल हुआ करता है। अपने आचरण और आदतें ऐसे ना बनाओ जिनसे इस्लाम को दाग़ लग जाए। बुरा काम करने वालों और इस्लाम की शिक्षा पर अमल ना करने वाले मुसलमानों से इस्लाम को दाग़ लगता है। कोई मुसलमान शराब पी लेता है तो कहीं उल्टी करता फिरता है। पगड़ी गले में होती है। मोरियों और गंदे नालों में गिरता फिरता है। पुलिस के जूते पड़ते हैं। हिंदू और ईसाई इस पर हंसते हैं। अब उस का शरीयते के ख़िलाफ़ ऐसा कर्म उस के ही अपमान का कारण नहीं होता बल्कि छुपे रूप में उस का प्रभाव नफ़स इस्लाम तक पहुंचता है। मुझे ऐसी ख़बरें या जेल ख़ानों की रिपोर्टें पढ़ कर बहुत दु:ख होता है जब मैं देखता हूँ कि इस क़दर मुसलमान बुरे कर्मों के कारण से सज़ा को पा रहे हैं। दिल बेक़रार हो जाता है कि ये लोग जो सीधा मार्ग रखते हैं। अपनी बुरे कर्मों से अपने आपको ही नुक़्सान नहीं पहुंचाते बल्कि इस्लाम पर हंसी कराते हैं। यही वजह थी कि किसी पिछली जनसख्या गिनती के समय में मिस्टर एबटसन साहिब ने अपनी रिपोर्ट में बहुत कुछ लिखा था। मेरा उद्देश्य इस से यह है कि मुसलमान लोग मुसलमान कहला कर उन मना की गई और हराम में मुब्तला होते हैं जो ना सिर्फ उनको बल्कि इस्लाम को शंकित कर देते हैं। अत: अपने चाल चलन और आदतें इस तरह की बना लो कि कुफ़्फ़ार को भी तुम पर (जो दरअसल इस्लाम पर होती है) आरोप लगाने अवसर ना मिले।

(मल्फ़ूज़ात जिल्द 1 पृष्ठ 2 से 3)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad